

ओमशान्ति मीडिया

18 जनवरी विश्व शांति दिवस पर विशेष

वर्ष - 15

अंक-23

मार्च-1, 2015



पाक्षिक

माउण्ट आबू

₹ 8.00

परमाणु शक्ति से ज्यादा ताकतवर है हमारे मन की शक्ति: शर्मा

ब्रह्माकुमारी संस्थान के शांतिवन परिसर में व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की ओर से राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित



शांतिवन। व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा 'व्यापार के अतिरिक्त जीवन' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए एस.के. शर्मा, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, आर.एन. मुखिया तथा अन्य।

शांतिवन। वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा रावतभाटा परमाणु ऊर्जा केन्द्र के साइट निदेशक एस.के. शर्मा ने कहा कि आज भले ही दुनिया में परमाणु सबसे बड़ी शक्ति के तौर पर है, लेकिन इस परमाणु की खोज करने वाला भी मनुष्य का मन है। सही मायने में परमाणु शक्ति से भी ज्यादा ताकतवर मन की शक्ति है। चाहे तो वह मन के उपजे विचारों से विनाश करे, चाहे तो बेहतर दुनिया का निर्माण। इसलिए मन की शक्ति को जानकर इसे श्रेष्ठ कार्यों में लगाने का प्रयास करना चाहिए। उक्त उद्गार वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा रावतभाटा परमाणु ऊर्जा केन्द्र के साइट निदेशक



एस.के. शर्मा ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शांतिवन में व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की ओर से आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में व्यक्त किये। व्यापार के अतिरिक्त जीवन विषय पर आयोजित सम्मेलन में उन्होंने कहा कि हम पूरा जीवन धन कमाने में ही व्यतीत कर देते हैं और इस बात को समझ नहीं पाते कि इसके अतिरिक्त भी जीवन है जोकि श्रेष्ठ भाग्य का आधार होता है। मनुष्य-मन में इतनी शक्ति है कि उसकी तुलना किसी भी शक्ति से नहीं की जा सकती। पहले किसी भी चीज के लिए मनुष्य के मन में विचार उठते हैं फिर उसका सृजन होता है। चाहे वह विनाशकारी हो या कल्याणकारी। इसलिए अपने मन की शक्ति को हमेशा रचनात्मक कार्यों में

लगाने का प्रयास करना चाहिए। हमारे परमाणु केन्द्र में ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा नियमित रूप से क्लासेज कराई जाती हैं, जिसका सकारात्मक प्रभाव वहां कार्य करने वाले अधिकारी एवं वैज्ञानिकों में देखने को मिल रहा है। इस मौके पर जयपुर के प्रसिद्ध व्यवसायी एम.एल. शर्मा, व्यवसाय एवं उद्योग प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. हरीश, ब्र.कु. मोहन पटेल, व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. गीता ने भी संबोधित किया।

कई विषयों पर हुई चर्चा

इस सम्मेलन के दौरान व्यापार एवं उद्योग में सम्पूर्ण सफलता पर चर्चा हुई। साथ ही व्यापार एवं उद्योग के दौरान आने वाली समस्याओं पर भी विचार विमर्श किया गया।

हमेशा जीवन में एकत्रित करें सत्कर्म रूपी पूंजी

ज्ञानसरोवर की डायरेक्टर एवं ऑस्ट्रेलिया में सेवाकेन्द्रों की संचालिका ब्र.कु. डॉ. निर्मला ने कहा कि अध्यात्म द्वारा हम व्यवसाय करते हुए भी अविनाशी कमाई इकट्ठा कर सकते हैं। हमें अपने इस जीवन में सत्कर्मों रूपी पूंजी को इकट्ठा करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जीवन में हमारा संबंध सिर्फ भौतिक साधनों से नहीं होता है, बल्कि जीवन जीने की कला से भी होता है। उन्होंने उद्योग व व्यापार में आध्यात्मिकता को अपनाने की अपील की और कहा कि जीवन में राजयोग अपनाना चाहिए।

जीवन के विकास के लिए ध्यान देना जरूरी

लर्सन एवं दूब्रो लि. के पूर्व उपाध्यक्ष आर.एन. मुखिया ने कहा कि वर्तमान समय भारत में दो शक्तियां कार्य कर रही हैं। एक है प्रजातंत्र और दूसरा यहां हर व्यक्ति अपनी सोच को पहचानता है। विदेशों में कहीं भी आत्मा के संबंध में ज्ञान नहीं दिया जाता है। आने वाले कुछ समय में इंजीनियरिंग समेत कई क्षेत्रों में भारत चीन को पीछे छोड़ देगा, लेकिन इस भागदौड़ में जीवन के विकास के लिए भी ध्यान रखना जरूरी है, जिसके लिए आत्मा और परमात्मा का सही ज्ञान जरूरी है जो इस संस्थान द्वारा मिलता है।

ग्रेसी सिंह ने आध्यात्मिक व देशभक्ति के तरानों पर दी मनमोहक प्रस्तुति

मनमोहक प्रस्तुतियों से लोग हुए भाव विभोर

व्यापार के अतिरिक्त भी जीवन विषय पर व्यापार एवं उद्योगपतियों के लिए आयोजित सम्मेलन के दूसरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम में कलाकारों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम में लगान, मुन्नाभाई एमबीबीएस समेत दर्जनों फिल्मों में अपनी छाप छोड़ने वाली ग्रेसी सिंह ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। भारत माँ और देशभक्ति तरानों पर जमकर कदम थिरकाए। उन्होंने इस कार्यक्रम में 'मेरा तो शिवबाबा एक दूसरा न कोई...', 'आने वाले कल की तस्वीर है हम...', 'मैं भारत का रहने वाला हूँ भारत की



बात सुनाता हूँ...' गीतों पर नृत्य प्रस्तुतियां दी। इसके साथ ही भांगड़ा और देशी परंपरागत नृत्यों की मूल्यों परक प्रस्तुतियों ने लोगों का खूब मनोरंजन किया। कार्यक्रम के बाद आयोजकों एवं देशभर से आए उद्योगपति एवं व्यवसायियों को संबोधित करते हुए कहा कि व्यापार केवल जीवन यापन के लिए है, लेकिन इसके अतिरिक्त भी जीवन है। इसलिए राजयोग ध्यान को जीवन का अंग बनाए। हमारे जीवन में सुबह का आरंभ राजयोग मेडिटेशन से करना चाहिए ताकि दिन भर में आने वाली परस्थितियों में बिना तनाव से कार्य कर सकें व जीवन शांति व खुशी से जी सकें।

आनंद में रहने के उपाय

ज्ञान और अज्ञान दोनों से मुक्ति का नाम “आनंद”

एक संत का आशीर्वाद लेने कई लोग आये हैं। संत एक के बाद एक को बुलाते हैं और पूछते हैं कि आपको क्या चाहिए?

सबसे पहले एक वृद्ध को बुलवाकर पूछते हैं, 'आपको क्या चाहिए?'

'मन में चैन नहीं है, मुझे आनंद चाहिए' वृद्ध ने जवाब दिया।

एक महिला से पूछने पर वो कहती है 'मुझे आनंद की तलाश है'।

युवक की भी ऐसी ही आवाज है: 'भटक-भटक कर थक गया परंतु आनंद नहीं मिलता। व्यापारी ने भी कहा कि: 'पर

के लोगों की खातिर काला-धंधा करता हूँ...लेकिन घर के लोगों को मेरी कदर नहीं है। मेरी स्थिति और वाल्मिकी लूटेरे की स्थिति में कोई अंतर नहीं है। मैं आनंद चाहता हूँ। बहुत आनंद, जिससे मैं अंदर से संतुष्ट हो जाऊँ।'

ऐसे में एक प्रेरक प्रसंग का स्मरण होता है। वर्षा ऋतु की एक अंधकार भरी रात्रि। आकाश में बादल हैं। बीच-बीच में बिजली की चमकार और आवाज़! एक युवक भटक गया है। बिजली की चमक के प्रकाश में रास्ता ढूँढते-ढूँढते एक फकीर की झोपड़ी में जाता है। उस वयोवृद्ध ने अपनी पूरी जिन्दगी उस झोपड़ी में ही बिता दी थी, कभी वह झोपड़ी से बाहर नहीं निकला था। युवक ने फकीर से पूछा कि आपने बिल्कुल संसार को नहीं देखा है क्या?

वृद्ध फकीर ने तुरंत जवाब दिया: 'देखा है ना! मैंने संसार को खूब अच्छी तरह से देखा है। क्या आपके अंदर में ही तो संसार नहीं है!'

वो युवक झोपड़ी के पास जाकर घबराते हुए झोपड़ी के द्वार को खटखटाता है। अंदर से आवाज़ आती है: 'कौन है? क्या खोज रहे हो?'

'उस युवक ने कहा, 'यही तो मुझे पता नहीं कि मैं कौन हूँ, वर्षों

अपने अहंकार को पुष्ट करने वाली हरेक वस्तु आपको आनंद के उद्ग्राम का स्रोत लगती हैं। लेकिन इसमें वर्तमान में या भविष्य में विक्षेप या अंतराल खड़ा होने पर आप अंदर से दुःखी हो होते हैं। अपेक्षाओं की तुष्टि-संतुष्टि की ही आनंद मान लेते हैं।

से आनंद की खोज में भटकता रहता हूँ। आनंद को खोज रहा हूँ और उसे खोजने की जिज्ञासा ही आपको कुटिया के द्वार पर ले आई है।

कुटिया के अंदर से हंसने की आवाज़ सुनाई दी और यह भी आवाज़ आई: 'जो खुद को जात (अर्थात् स्वयं) को नहीं पहचानता उसे आनंद कैसे प्राप्त हो सकता है! इस खोज में दिये तले अंधेरा नहीं रह सकता। परंतु ये जानना भी बहुत जानने जैसा है कि मैं मेरी जात (स्वयं) को नहीं जानता हूँ।

इसीलिए ही मैं अपनी कुटिया का द्वार खोलता हूँ। और याद रहे कि यदि हम दूसरे का दरवाजा खोलते हैं तो हकीकत में कोई दरवाजा खुलता नहीं है।'

और झोपड़ी का द्वार खुला, बिजली के प्रकाश में उस युवक ने देखा कि उसके सामने वृद्ध फकीर खड़ा है। वे अद्भुत सौन्दर्यवान हैं, वे दिगम्बर (नग्न) हैं। युवक उस फकीर के चरणों में बैठ जाता है, और उसके चरणों को नमन करते हुए पूछता है: 'आनंद क्या है? आनंद कहाँ है?'

युवक की बात सुन वृद्ध फकीर हंसने लगा! 'मेरे प्रिय युवक, आनंद तो अशरण यानि कि किसी को शरण नहीं स्वीकार करने में है। ऐसा शरण छोड़ देने से आनंद का पुर छूटने लगता है। इसलिए तू मेरी शरण छोड़ दे! सबके चरण छोड़ दे। आनंद के लिए किसी की ये शरणागत खोजना है यही तेरी भूल है। आनंद तेरे हाथ की बात है। कहिए, आपको क्या चाहिए!'

फकीर की बात सुन युवक संकोच में पड़ गया और फिर उसने



- व. कु. गंगाधर

बुद्धि शुद्ध, मन शान्त यही अन्तिम स्थिति

सबका चेहरा मुस्कराता हुआ है ना! हमारी इस मुस्कराहट में अंदर से यही गीत निकलता शुक्रिया बाबा आपका, कितने हम भाग्यवान हैं जो सारे संसार में हमारे जैसा कोई मुस्कराने वाला नहीं है। सदा मुस्कराने की रिहसल करो तो स्वप्न में भी मुस्कराते रहेंगे, इसके लिए न इधर देखो, न उधर देखो। दुनिया वालों को ऐसे मुस्कराना सहज नहीं है।

किसी भी कारण से किसी के लिए अगर द्वेष भाव आया तो जायेगा नहीं, इतना खतरनाक है। सदा ही बाबा को सामने देखो, साथ में देखो तो पूरा सच्चा योगी, रीयल योगी, सहज योगी बन जाते हैं। बाबा को साथ में देख करमयोगी बन जाते हैं। अंदर ही अंदर स्थिर बुद्धि जब तक नहीं है तो अडोल अचल नहीं रहेंगे माना डोलायमान और चलायमान है, यह दो बातें परीक्षा के रूप में आती हैं। इसमें मूँड़ने, घबराने की बात नहीं है। कैसे करें, क्या करें के बजाए बाबा कहता है यह करो ऐसे करो, बस, तो योग लगाना इज़्जी हो जाता है। फिर नैचुरल योगी बन जाते हैं। नैचुरल योगी का सर्व सम्बन्ध एक बाबा के साथ माता-पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरु... की शक्ति से निर्भय है, निर्वैर है। ऐसी ऐसी बातों का अभ्यास करने से नैचुरल योगी...। फिर कोई नहीं कहेगा

इसकी नेचर थोड़ी ऐसी है क्योंकि नैचुरल योगी का जिसके साथ योग है उन जैसी नेचर हो जाती है। जिसके साथ सम्बन्ध होगा, जिसके संग में रहेगा उसका रंग लग जायेगा।

बी होली बी राजयोगी, होली फर्स्ट, पवित्रता से जो योगी है उसमें अपवित्रता का अंश भी नहीं है। थोड़ी भी अपवित्रता बड़ी दुश्मन है, थोड़ा भी व्यर्थ ख्याल शुद्ध आत्मा बनने नहीं देगा। पुरुषार्थ में मैं शुद्ध आत्मा हूँ, मन शान्त तभी होता है जब बुद्धि स्थिर है। किसी ने मुझसे पूछा कि स्मृति क्या होती है? अन्तिम घड़ी की स्मृति में एक बाबा और कुछ न हो उसके लिए क्या पुरुषार्थ है? मन शान्त बुद्धि शुद्ध, कोई भी हलचल न हो। मानो हलचल हो रही है पर हमारी अचल अडोल स्थिति हलचल को बंद कर देती है। महाविनाश के पहले ऐसी-ऐसी बातें होंगी, दृश्य होंगे लेकिन हमें डरना नहीं है। जो बहुतकाल से निडर स्थिति में रहे हैं उनको सामना करने में डर नहीं लगेगा।

शिवबाबा ऐसी फीलिंग देता है जो सबको बाबा की याद आ जाये, इतना खींचता है, बैठा है वहाँ। बाबा के कमरे में जाओ तो ऐसा लगता जैसे बाबा मेरे को देख रहा है। वही खटिया, वही गद्दी उसमें जो सुख पाया है, वो सारा स्मृति में आ

गया। अगर इसके अलावा कोई भी बात

याद आई, तो बाबा की याद नहीं आयेगी फिर बाबा मुझे याद नहीं करेगा। अगर सूक्ष्म



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

में मैं कोई बात याद करूँगी तो बाबा याद नहीं आयेगा। अगर बाबा मुझे याद नहीं आयेगा तो बाबा मुझे क्यों याद करेगा? एक याद अक्षर की गहराई में जाओ, बाबा बड़ा अच्छा है। करनहार करता ऐसा है, जो कराने में बड़ा होशियार है। एक बाबा को करावनहार के रूप में याद करो। करनहार फिर करावनहार। हम नहीं कह सकते, करावनहार करा रहा है, ऐसा मेरा बाबा है। धन से सेवा कराने की भी अक्ल चाहिए, ऐसे ही तुमने किसको कहा कि तुम ये करो, तो वो नहीं मानेगा। यज्ञ के सारे भण्डारे कैसे चलते हैं? मिल करके करते हैं। यह नियम कहां या वरदान कहां, कहाँ पर भी रहते पहले यज्ञ सेवा किया, कराया है, मेरे पास धन हैं नहीं, पर किसका सफल कैसे कराया जाये, यह भी अक्ल चाहिए। सफल करना और कराना, उसके लिए पहले अपना समय सफल करो। मन-वाणी-कर्म श्रेष्ठ है तो सफल है, तो भण्डारे की भण्डारी भरपूर रहेगी।



दादी हृदयमोहिनी अति. मुख्य प्रशासिका

रहा है। वैसे तो हमने अनेक बार राज्य किया है, अभी तो सिर्फ रिपीट करना है। आप सभी पवित्र आत्माएं हो। पवित्रता का ही पूजन होता है। पवित्रता ही जीवन की शोभा है। आप सभी सेवाधारी टीचर्स को बाबा आज लाख-लाख बधाइयाँ दे रहे हैं और खुश हो रहे हैं अपने सेवाधारी साथियों को देख। देखो, बाबा का जन्म भी सेवा के लिए होता है। आज बाबा साकार में तो नहीं हैं लेकिन एक-एक को सूक्ष्मवतन में इमर्ज कर बहुत प्यार कर रहे हैं। आपने अपनी जीवन सेवा के लिए बिताई है, बाबा आप शिव शक्तियों को सेवा की मुबारक दे रहे हैं। एक-एक टीचर्स को देख बाबा कैसे खुश होता है, बात मत पूछो। हमने साकार बाबा को देखा बच्चियों की सेवाओं का समाचार सुन बाबा बहुत खुश होते थे, कहते थे कमाल है फलानी बच्ची की। तो बाबा आपको सूक्ष्मवतन में इमर्ज करके वाह-वाह के गीत गा रहा है कि कुमारियों ने हिम्मत रखी। हम सबको दिल्ली की स्वर्ण बनाना है यह तो गैरन्टी है। स्वर्ण की स्थापना करने वाली कुमारियाँ, माता या

पुकार में नहीं गंवाओ, अमृतवेला लेने का समय

भाइयों को बाबा आज सेवा की करोड़ों मुबारकें दे रहे हैं। टीचर्स को सिर्फ वाणी की सेवा ही नहीं करनी है बल्कि अमृतवेले उठ भक्तों को सकाश देना है। आप तो बाबा से सीधा मिल लेते हैं लेकिन जो नहीं मिल पाते उन्हें प्राप्ति करानी है। भक्त भी कम नहीं, आज बाबा विशेष भक्तों को यादप्यार दे रहे हैं। टीचर्स को, सभी को दिल का सहारा देना है, चाहे ज्ञान में चलने वाले हों या भक्त दोनों। एक दूसरे को मुबारक देते अब विष्णो को खत्म करो, मुबारक देना माना हुआ है। बाबा के प्यार का रिटर्न सेवा है, बाबा इस विश्व की ऐसी सेवा चाहते हैं जो पुरानी विश्व बदलकर नई हो जाये। संस्कार मिलाने के लिए जो ज्ञान योग और धारणा की क्लास होती है उस पर ध्यान दो। अमृतवेले सारी कमी कमजोरी बाबा को दे दो और उसे खत्म करने की बाबा से प्रार्थिस करो। बाबा अमृतवेले दृष्टि देता है, वही हमारे लिए हुआ है और प्यार है, उसे अमृतवेले स्वीकार करो। अमृतवेला सुन बाबा बहुत खुश होते थे, कहते थे कमाल है फलानी बच्ची की। तो बाबा आपको सूक्ष्मवतन में इमर्ज करके वाह-वाह के गीत गा रहा है कि कुमारियों ने हिम्मत रखी। हम सबको दिल्ली की स्वर्ण बनाना है यह तो गैरन्टी है। स्वर्ण की स्थापना करने वाली कुमारियाँ, माता या

रहा है, दुआयें लेना हमारा काम है। अमृतवेले जागृत अवस्था में वरदान लेंगे तो पुरुषार्थ सहज हो जायेगा। संस्कार मिटाने की कोशिश नहीं करनी पड़ेगी। टीचर्स अपने को और अपनी क्लास को नम्बरवन करेगी तो ब्रह्माकुमारी का नाम बाला होगा। टीचर्स अपनी-अपनी सेवा अच्छी कर रही हैं, सेन्टर्स अच्छे चल रहे हैं लेकिन क्लास को आगे बढ़ाओ। अंदर के तीव्र पुरुषार्थ का टीचर्स को ओना रखना है। जो भी है वह कायदेमुजोब करो, बार-बार पूछो नहीं। कायदे पर चलो ताकि कभी कोई रिपोर्ट न मिले।

निर्विघ्न रहने के लिए टीचर्स अपने पर अटेन्शन रखें। अमृतवेले उठकर अपनी चेकिंग करो कि मेरे में क्या कमी है, फिर उसी प्वाइन्ट पर सिरमण कर उसे समाप्त करो। कारण का निवारण करो और देखो मैं इस कमजोरी को खत्म करने में सफल रही? निमित्त पर सबका ध्यान जाता है। बाबा कहते ऐसा बनो जो राजधानी में पहले आओ, पहले तो मम्मा बाबा का राज्य होगा लेकिन उनके साथ हम भी आयेगे। तो सदा इसी खुशी में रहना है और निर्विघ्न भी रहना है। जितना हो सके यहाँ ही सबको संतुष्ट करना है। हम देने वाले दाता हैं, दे तभी सकेगे जब स्वयं अंदर से भरपूर होंगे। जितना हम खुश होंगे हमें देख सब खुश होंगे।

गीता और भगवान

‘भगवान और गीता’ - यह जो विषय है, यह बहुत ही उत्तम है क्योंकि ‘भगवान’ शब्द आत्माओं में से उत्तम जो परमात्मा है, उनका वाचक है और गीता सभी शास्त्रों में उत्तम है। फिर इन दोनों से मनुष्य का जीवन भी उत्तम बनता है और उससे प्राप्ति भी उत्तम होती है। परन्तु आज, जैसे परमात्मा के विषय में अनेक

भी नहीं कर सकता और उसका पालन किये बिना वह योगयुक्त और जीवनमुक्त भी नहीं हो सकता। भगवान के स्वरूप की सही पहचान के लिए गीता का पहला निर्देश - आज गीता-ज्ञान का दाता देवकी-नंदन, मोर-मुकुट-धारी श्रीकृष्ण को माना जाता है। गीता में एक ऐसा चित्र भी

भगवान ने कहा कि - ‘मैं तुझे दिव्य चक्षु देता हूँ, तू उस द्वारा मुझ परमात्मा का वह वास्तविक रूप देख। अतः गीता का पहला निर्देश यह है कि भगवान को व्यक्त या दैहिक रूप वाला मानना बुद्धिहीनता है।

भगवान का दिव्य रूप कौनसा है? - अब प्रश्न उठता है कि यदि मोर-मुकुटधारी



भगवान ने स्वयं बतलाया है कि देह अलग है, देही अलग है। गीता में देह को ‘क्षेत्र’ और आत्मा को ‘क्षेत्रज्ञ’ कहा गया है और दोनों का भली-भांति भेद स्पष्ट किया गया है। अतः शारीरिक रूप, जो कि लोगों के मन में याद हो आता है को ‘भगवान’ नहीं कहेंगे बल्कि जिस चेतन सत्ता ने शरीर का आधार लिया उसे ‘भगवान’ कहेंगे।

मते हैं, वैसे ही गीता पर भी अनेक टीकाएं और टिप्पणियां हैं। अतः गीता के बारे में स्पष्ट, यथार्थ और निश्चयात्मक रीति से जानने की आवश्यकता है।

गीता में किसके महावाक्य हैं? - वास्तव में गीता की उत्तमता ही इसका कारण है कि यह स्वयं भगवान के महावाक्यों का संकलन है। तभी तो इसका नाम भी ‘भगवद्गीता’ है। अन्य किसी भी शास्त्र का ऐसा नाम नहीं है। परन्तु इसका नाम ‘भगवद्गीता’ मानते हुए भी बहुत से लोग देवकी-पुत्र श्रीकृष्ण को इसका आदि वक्ता मानते हैं। अतः संसार के करोड़ों लोग, जो कि श्रीकृष्ण को भगवान नहीं मानते, वे इसे भी भगवान के महावाक्यों का प्रथम नहीं मानते, बल्कि इसे एक महात्मा के वचनों का संग्रह मानते हैं। इससे गीता का माहात्म्य बहुत कम हो गया। अतः इस बात को आज स्पष्ट करने की जरूरत है कि भगवद्गीता में जो ‘भगवान’ शब्द है, वह किसका वाचक है अर्थात् गीता के भगवान का स्वरूप क्या है। भगवान के स्वरूप को यथार्थ रीति से जाने बिना गीता का ठीक अर्थ नहीं समझा जा सकता और भगवान को जो आज्ञा है कि ‘तुम मुझे याद करो, मुझमें मन लगाओ (मन-मनाभव)’ आदि-आदि, मनुष्य उसका पालन

प्रायः लगा रहता है। इस प्रकार गीता के प्रसंग में ‘भगवान’ शब्द का उच्चारण होते ही गीता-प्रेमियों के मन में इस दैहिक चित्र की ही याद आती है। परन्तु भगवान ने स्वयं बतलाया है कि देह अलग है, देही अलग है। गीता में देह को ‘क्षेत्र’ और आत्मा को ‘क्षेत्रज्ञ’ कहा गया है और दोनों का भली-भांति भेद स्पष्ट किया गया है। अतः शारीरिक रूप, जो कि लोगों के मन में याद हो आता है को ‘भगवान’ नहीं कहेंगे बल्कि जिस चेतन सत्ता ने शरीर का आधार लिया उसे ‘भगवान’ कहेंगे। गीता में भगवान के स्पष्ट महावाक्य हैं कि ‘मैं अपनी प्रकृति को अधीन करके प्रगट होता हूँ (प्रकृति स्वाम् अधिष्ठाय संभवामि...)। अतः शरीर को ‘भगवान’ समझना गलत है, बल्कि शरीर रूपी प्रकृति को जो अधीन करने वाली सत्ता है, वही भगवान है। गीता में अन्य स्थलों पर भी लिखा है कि प्रकृति अलग है, पुरुष अलग है और भगवान तो पुरुषोत्तम है। इसलिए गीता में कहा है कि - मैं अव्यक्त हूँ, व्यक्त शरीर में आता हूँ परन्तु बुद्धिहीन लोग मुझे व्यक्त (दैहिक रूप वाला) मान लेते हैं (अव्यक्तम् व्यक्तमापन्न मन्यते माम् अबुद्धयः)। शरीर से भिन्न अव्यक्त एवं दिव्य होने के कारण ही तो

शारीरिक रूप, भगवान का नहीं है तो उनका निज दिव्य रूप कौनसा है? इस बात को समझने के लिए पहले ‘आत्मा’ अथवा ‘पुरुष’ को जानना जरूरी है। आत्मा के बारे में भगवान ने कहा है कि जैसे इस लोक को एक सूर्य प्रकाशित करता है, वैसे ही इस क्षेत्र अथवा शरीर को आत्मा

प्रकाशित करती है, (यथा प्रकाशयति एकः कृत्स्नं लोकम् इमं रवि, क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृतस्नं प्रकाशयति भारत)। अतः स्पष्ट है कि आत्मा एक ज्योतिस्वरूप, चेतन सत्ता है जो कि शरीर में सर्वव्यापक नहीं है, बल्कि जैसे इस लोक में सूर्य एक स्थान पर होते हुए लोक को प्रकाशित करता है, वैसे ही आत्मा भी शरीर में एक स्थान पर है। यह आत्मा ज्योति-बिन्दु रूप है और भूकृति में ही इसका वास है जहां पर लोग प्रायः बिन्दी अथवा तिलक लगाया करते हैं। इसीलिए ही गीता में भी भगवान ने कहा है कि - शरीर छोड़ते समय भूकृति के बीच जो आत्मा है, उसमें ठीक रीति से स्थित होने वाला ही परम पुरुष परमात्मा के पास जाता है (प्रयाणकाले भूर्वोमध्ये प्राणम् आवेश्य सम्यक् सतं परं पुरुषमुपयति दिव्यम्...)। तो जैसे आत्मा अथवा पुरुष ज्योति-बिन्दु रूप अथवा ज्योति का एक अणु मात्र है, वैसे ही परमात्मा भी ज्योतिबिन्दु रूप ही है। वह केवल धर्म-गलानि के समय शरीर लेता है। इसीलिए गीता में भगवान ने कहा है कि ‘मैं सभी देहधारियों में श्रेष्ठ हूँ (अधियज्ञोहम् एवं अत्र देहे, देहमृताम् वर)। अब आगे अगले अंक में।

‘मैं’ और बाधाएं... - पेज 6 का शेष

क्या हम इन लोगों को असफल मानेंगे? वे समस्याएं न होने की वजह से नहीं, बल्कि समस्याओं की वजह से कामयाब हुए; लेकिन नकारात्मक सोच वाले लोगों को लगता है कि ऐसे लोगों को कामयाबी ‘केवल तकदीर की वजह’ से मिली।

सफलता की सारी कहानियों के साथ महान असफलताओं की कहानियाँ भी जुड़ी हुई हैं। फर्क केवल इतना था कि हर असफलता के

बाद वे जोश के साथ फिर उठ खड़े हुए। इसे पीछे धकेलने वाली नहीं, बल्कि आगे बढ़ाने वाली नाकामयाबी कहते हैं। हम सीखते हुए आगे बढ़ते हैं। हम अपनी असफलताओं से सबक लेते हुए आगे बढ़ते हैं। सन् 1914 में थॉमस एडिसन की फैक्ट्री जल गई। उस समय उनकी उम्र 67 साल थी। एडिसन जवान नहीं रह गए थे और फैक्ट्री का बीमा बहुत थोड़े पैसे का था। इसके

बावजूद अपनी जिन्दगी भर की मेहनत को धुआं बन कर उड़ते देख कर उन्होंने कहा, ‘‘यह बरबादी बहुत कीमती है। हमारी सारी गलतियाँ जल कर राख हो गईं। मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने हमें नई शुरुआत करने का मौका दिया।’’ उस तबाही के तीन हफ्ते बाद ही, उन्होंने फोनोग्राम का आविष्कार किया। क्या शानदार नज़रिया है।



पुणे-धनकवाड़ी। प्रकाश जावड़ेकर, पर्यावरण मंत्री के साथ ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु. सुलभा तथा ब्र.कु. आरती।



चन्द्रपुर-महा। डिप्युटी मिनिस्टर हंसराज अहिर, केन्द्र सरकार को मीडिया की सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु. दीपक।



वड़ोदा। ‘मन की सच्ची शांति व सम्पूर्ण स्वास्थ्य’ विषय पर सम्बंधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. गिरीश पटेल। ध्यानपूर्वक सुनते हुए गणमान्य जन।



गांधीनगर-गुज. ‘विश्व शांति योग तपस्या भट्टी’ का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबू, ब्र.कु. कैलाश, ब्र.कु. रंजन, ब्र.कु. तारा, ब्र.कु. कांति तथा अन्य।



इन्दौर-म.प्र. 18 जनवरी ब्रह्माबाबा के पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए ब्र.कु. ओमप्रकाश। साथ हैं ब्र.कु. बहनें।



नरसिंगपुर। ‘मूल्यानिष्ठ पत्रकारिता’ विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभांभं करते हुए ब्र.कु. प्रो. कमल दीक्षित तथा अन्य।



हाथरस-उ.प्र.। राज्यपाल माननीय रामनाइक जी से 'मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत' के अंतर्गत व्यसन मुक्ति विषय पर चर्चा करते हुए ब्र.कु. राधा। साथ है ब्र.कु. बंदी विशाल, ब्र.कु. गजेन्द्र तथा ब्र.कु. दिनेश।



दिल्ली। राज्य वर्धन सिंह राठोड़, सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री के साथ कम्युनिटी रेडियो स्टेशन्स विकास के बारे में चर्चा करते हुए ब्र.कु. यशवंत, स्टेशन हेड, रेडियो मधुवन।



मोहाली। रोटरि इंटरनेशनल के जिला सम्मेलन में सम्बोधित करने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. अमीरचंद, जिला राज्यपाल प्रदीप चहल, पूर्व जिला राज्यपाल डॉ. एस.पी. सिंगला तथा अन्य क्लब्स के अध्यक्ष।



अलीराजपुर। गायत्री मंदिर के महंत देवा पुरी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. माधुरी व ब्र.कु. नारायण।



हरिद्वार। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान अपने विचार व्यक्त करते हुए आशुशक्ति महाकाली पीठ कनखल के अध्यक्ष महामण्डलेश्वर स्वामी रसानन्द। साथ है ब्र.कु. मीना।



बोंगईगांव-असम। बोंगईगांव कॉलेज के स्वर्णजयंती समारोह में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी में उपस्थित है ब्र.कु. लोनी तथा प्रतिभागी बच्चे।

आध्यात्मिकता द्वारा व्यसनमुक्त जीवन

वर्तमान हम सभी एक प्रतिस्पर्धात्मक और तनावपूर्ण वातावरण के बीच रहते हुए अति दबाव वाला जीवन जी रहे हैं, जिसके चलते हम सभी किसी न किसी व्यसन के आदि हो ही जाते हैं। विश्व में हुए एक सर्वेक्षण अनुसार अधिकांश व्यसनी व्यक्तियों ने अपने अनुभव में यही कहा है कि उन्हें व्यसन करने से कुछ पल की शांति व सुख का अनुभव होता है, अर्थात् अधिकतर लोग ऐसा मानते हैं कि तनावमुक्त होने के लिए किसी न किसी प्रकार का व्यसन करना पड़ता है। यह जानने के बावजूद कि इन व्यसनों का हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, हम फिर भी जिज्ञासा, साधियों के दबाव में आकर, अवसाद के वश एवं हताशा से बाहर निकलने के लिए उनमें लिप्त हो जाते हैं। आज के तथाकथित आधुनिक समाज का एक आश्चर्यजनक तथ्य बड़ी हैरानी पैदा करता है, जिसमें हम देख रहे हैं कि विश्व के अंदर जितने भी व्यसनी हैं उनकी बहुमत प्रतिशत 11-30 वर्ष के आयु वर्ग की है, जो उम्र का एक ऐसा चरण है, जहां हमारा मन बड़ा कोमल एवं नम्य होता है और यदि उसे सही समर्थन और मार्गदर्शन के साथ संवारा जाए, तो वह समाज के उत्थान में बड़ी सशक्त भूमिका निभा सकता है। पर

अफसोस की बात यह है कि वर्तमान परिदृश्य कुछ और ही है, नतीजन अपराधिक प्रवृत्तियों में बढ़ोतरी होती जा रही है और सामाजिक नैतिकता में गिरावट आती जा रही है। आमतौर पर व्यसनों को हम सिगरेट, गुटका, गर्द, शराब इत्यादि के रूप में देखते व समझते हैं, लेकिन इन सभी व्यसनों के अलावा कुछ ऐसे सूक्ष्म व्यसन भी हैं, जिन्हें हम अनदेखा कर देते हैं, जैसे कि सुबह ही न्यूज़ पेपर पढ़ना, टी.वी. देखना, इंटरनेट पर ज्यादा समय बिताना, मोबाइल फोन, एस.एम.एस., चाय, कॉफी इत्यादि। हममें से अधिकतर लोग इन सभी व्यसनों को हानिरहित आदतें मानते हैं, किन्तु हमें यह जांच करने की आवश्यकता है कि कहीं हम धीरे-धीरे उन आदतों पर निर्भर तो नहीं होते जा रहे? क्योंकि ऐसी कोई भी आदत, संस्कार या पदार्थ जो धीरे-धीरे हमें अपने कब्जे में कर लेता है और अंततः जो हमारे लिए अप्रतिरोध्य हो जाता है, उसे व्यसन ही कहा जाता है। अतः हमें स्वयं से यह प्रश्न पूछना चाहिए कि क्या मुझे सुबह की चाय नहीं मिलने पर सिरदर्द हो जाता है? या सुबह का अखबार हाथ में न मिलने पर क्या मुझे चिड़चिड़ाहट महसूस होती है? यदि इसका जवाब हाँ है, तो फिर यह बड़ी चिंता

का विषय है, क्योंकि एक लत धीरे-धीरे अपने साथ अनेक लतें पैदा कर देती हैं, जिसके परिणामस्वरूप हम इतने कट्टर व्यसनी बन जाते हैं कि हम चिकित्सा इलाज से परे हो जाते हैं। समाजशास्त्रियों द्वारा किये गए गहरे अध्ययन के अनुसार यह देखा गया है कि इन सभी व्यसनों का मूल कारण आधुनिक समाज परिव्यय में आध्यात्मिकता का अभाव है। बड़ी अजीब सी बात है कि आज हम रचता अपनी ही बनाई हुई रचना के गुलाम बन गए हैं। ऐसे परिदृश्य के तहत, हमारे पास आध्यात्मिकता का ही एकमात्र ऐसा तंत्र है, जो इस संकट से उबरने में हमारी सहायता कर सकता है, क्योंकि आध्यात्मिकता हमें खुद की असली पहचान से रूबरू कराती है और साथ-साथ सर्वोच्च सत्ता परमात्मा से संबंध बनाने में हमारी सहायता करती है। एक बार हम परमात्मा से जुड़ जाते हैं, उसके पश्चात् हम कभी भी अपने आंतरिक निर्वात को भरने के लिए किसी बाह्य सांसारिक बातों की तरफ नहीं देखेंगे, अर्थात् हम एक शांतिपूर्ण सत्व बनकर सभी तृष्णाओं पर काबू पाके सर्वशान्तिमान के सानिध्य में सदा उत्साहित रहेंगे। तो आओ, आज से आध्यात्मिकता के व्यसनी बनें, ताकि अन्य सभी प्राणघातक व्यसनों से हमारी मुक्ति हो।

— ब्र.कु. निकुंज, मुम्बई।

आप हैं ही सम्पूर्ण, तो प्राप्ति की इच्छा क्यों?

प्रश्न:- वो कल आ जायेगा जिसने मुझे खुशी देनी है।
उत्तर:- खुशी देनी है वो परिस्थिति आ जायेगी। लेकिन आज अगर मैंने चिंता क्रियेट की तो कल भी मेरी मानसिक स्थिति कैसी होगी? कल मेरे पास एक और कल है ना, चिंता करने के लिए। देखो अगर मेरी चिंता करने की आदत बन गयी है तो दिन की समाप्ति भी चिंता के साथ ही होगी। किसी ने सच ही कहा है कि हम पूरा जीवन उन बातों को सोच कर बिता देते हैं जो वास्तव में हुई ही नहीं हैं। जब वो होगी तब देखेंगे ना। फिर हम कहते हैं इसलिए मैं चिंता करता हूँ कि मैं अपना ध्यान रख सकूँ। हमने चिंता के साथ सावधानी को भी जोड़ दिया। सावधानी तो प्यार है, स्नेह की शक्ति है और चिंता भय की शक्ति है। भय और स्नेह इकट्ठे नहीं हो सकते।
ये जो भविष्य की चिंता करने की आदत है, उससे हम वर्तमान में भी डर से जीते हैं। इससे हमारी बहुत सारी एनर्जी खत्म हो जाती है और हमारा वर्तमान समय दर्द में बीतता है। दूसरा आपने कहा प्राप्ति को प्राप्त करना है। ये तो बहुत अच्छा है कि आप कुछ प्राप्त करना चाहते हैं। लेकिन जो इस तरह का जीवन जीते हैं, वो प्राप्ति पर ही निर्भर होते हैं। फिर उनकी मानसिक स्थिति अगले प्राप्ति पर निर्भर होती है। वो ऐसे नहीं बैठ पायेंगे, वो वास्तव में खुश नहीं होते हैं, वे हमेशा दूसरी प्राप्ति की ओर देखते रहते हैं। क्योंकि जो प्राप्ति है वो उनको प्रोत्साहन देती है। कभी-कभी यह मान्यता हो सकती है या औरों की स्वीकृति हो सकती है। कुछ समय के लिए यह महसूस भी होता है कि मुझसे ऐसा

हो गया या कुछ समय बाद सोचते हैं कि मुझे तो वो करते ही जाना है क्योंकि उसी से मुझे खुशी मिल रही है। तब क्या होता है कि वो अपना लक्ष्य निर्धारित करते जाते हैं और टिक मार्क करते जाते हैं, ये हुआ, ये प्राप्त किया। जिस पल वो कुछ प्राप्त करते हैं तो उन्हें एक राहत की अनुभूति होती है कि चलो ये भी हो गया। इससे हमें राहत मिलती है खुशी नहीं। और ये भी थोड़ी देर के लिए होता है। जिन्होंने अपनी खुशी को प्राप्ति के ऊपर निर्भर कर दिया तो वो खुश भी नहीं होते, उस पल वो सिर्फ राहत महसूस करते हैं और वो भी कितनी देर के लिए? बस थोड़ी देर के लिए। अगले पल में हम हर समय खुशी की चाहना रखते हैं न ही भय में, न ही पूर्वानुमान में कि आगे क्या होगा। ये भी करना है क्योंकि जब ये कर लेंगे तब खुशी मिलेगी। तब उनका सारा ध्यान किस पर केंद्रित हो जाता है? कि अब क्या करना है। उस प्रक्रिया में वर्तमान समय बीत जाता है। अब ऐसे लोगों के जीवन में प्राप्ति बहुत सारी आ जाती है। क्योंकि जीवन में उनका एक ही उद्देश्य होता है कि हमें कुछ प्राप्त करना है। उन्हें स्वयं से पूछना चाहिए कि क्या उन्हें खुशी मिली? क्योंकि प्राप्ति की जो पूरी यात्रा होती है वह एक प्राप्ति से पूरी होकर दूसरी प्राप्ति की ओर बढ़ जाती है और यह चक्र हमेशा चलता ही रहता है।
प्रश्न:- उसमें काफी कुछ खोने का डर रहता है कि जो मेरे पास है कहीं वो भी न छूट जाये

या मैं वहां तक पहुंच जाऊंगा?
उत्तर:- कहीं न कहीं उनकी खुशी उस प्राप्ति के ऊपर निर्भर हो जाती है क्योंकि वो एक संस्कार बन जाता है और उस प्राप्ति को पाने के लिए वो कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं। चाहे वो अपनी वैल्यू सिस्टम पर हो, चाहे वो अपने परिवार पर हो, क्योंकि प्राप्त करना है... प्राप्त करते जाना है। प्राप्त हो जायेगा.. खुशी पता नहीं। जैसे स्वप्न देखना, बहुत ज्यादा भविष्य के बारे में सोचना, तो हमें स्वयं से पूछना चाहिए कि इससे मुझे खुशी मिलेगी? दूसरी बात जो हम बहुत साधारण चीज करते हैं कि हम भविष्य में खुशी ढूँढते हैं। यह तो इच्छा हुई ना। हर कोई यही कहेगा कि छांव के बिना तो जीवन कैसे बीत सकता है। ये होगा तो मुझे खुशी मिलेगी, यह तो इच्छा हुई। मैं लोगों से प्यार पाने की भी इच्छा रखती हूँ, मैं ज्यादा समय के लिए इच्छा रखती हूँ, मुझे और समय मिल जाये न तो मैं बहुत कुछ कर सकती हूँ, मुझे तो 24 घंटे भी कम पड़ते हैं। ये जो इच्छाओं की सूची है वो बहुत लम्बी होती जाती है और कई बार हम कहते हैं कि हमारी इच्छा पूरी हो नहीं होती है। हमारी जितनी इच्छायें पूरी होती हैं, उतनी ही उसकी सूची और लम्बी हो जाती है। क्योंकि इन इच्छाओं के पीछे जो सूक्ष्म विचार होता है, वो ये है कि जब ये सब इच्छायें पूरी हो जायेंगी तो मैं पूर्ण रूप से सुरक्षित व खुश महसूस करूँगी।
जबकि राजयोग हमें यह बताता है कि बाहर की कोई भी चीज खुशी नहीं दे सकती है। मुझे बाहर से कुछ भी नहीं चाहिए जिससे मैं पूर्ण हो जाऊँ।



ब्र.कु. शिवानी



डोमिवली-घाटकोपर। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'सखी मंच मैराथॉन' का झण्डा दिखाकर शुभारंभ करते हुए प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता अक्षय कुमार, ब्र.कु. करुणा, माउण्ट आबू, ब्र.कु. निकुंज, ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. शक्कु, भाजपा नेता सुधीन्द्र कुलकर्णी तथा अन्य। मैदान में मैराथॉन में भाग लेने वाली बहनें व मातायें।

परिवर्तन से परम शक्ति की ओर...

हम में से अगर कोई लकड़हारा किसी बगोचे में जाता है तो वह वहाँ अपनी पसंद की लकड़ियों को परखेगा। ठीक इसी तरह से कोई चित्रकार उसी बगोचे में जाता है तो वह वहाँ फूलों की सुंदरता को निरखेगा। तो यह सब कुछ हम पर ही निर्भर करता है, यह हमारा शरीर, शरीर की कर्मद्रियाँ वैसा ही करती हैं जैसा आदेश हमारा मन देता है। इसलिए पापी किसी जेलखाने में नहीं, किसी आतंकारी शिविर में नहीं बल्कि हमारे भीतर बैठा हुआ है, हमारा मन। जब-जब मन पुण्यकार्य में लीन होता है तब-तब पुण्यात्मा

अस्तित्व का धर्म हो, और उसमें से जो तथ्य निकल कर आयेगा वही हमें वास्तविक और सच्चा धार्मिक बनायेगा जिसका परिणाम होगा, सम्पूर्ण शान्ति, सम्पूर्ण आनंद, अमृतमुक्ति, जीवनमुक्ति अथवा निर्वाण।

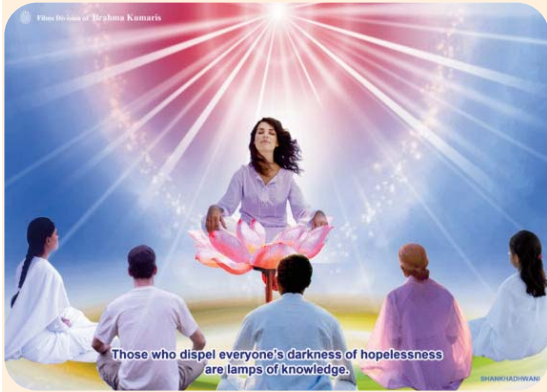
जोता हुआ चित्त सदा सुखदायी होता है और हारा हुआ चित्त दुःखदायी। जोतना माना परिवर्तन, चित्त और चेतना का परिवर्तन। जैसे गाय भैंस का गोबर मिट्टी में मिलाने पर खाद बन जाती है जिसे हम गंदगी कहते हैं और इसे जब किसी बीज में डाला जाता है तो वह उसका भोजन बन जाता है, फिर वह बीज

में बदल गया तो ठीक इसी तरह हम भी अपने चित्त में, मन में परिवर्तन लाकर हम अपने जीवन में भरी गंदगी और किचड़े में भी खुशबू ला सकते हैं। आज जितनी भी महान आत्मायें हैं वे भी जन्म से कोई महान नहीं थे, वे भी किसी न किसी कोख से ही इस धरती पर आये हैं। जन्म के धरातल पर तो हम सब एक जैसे हैं, फर्क पड़ जाता है जीवन के धरातल पर, जीवन की समझ और उसमें परिवर्तन पर। मेरे कहने का मतलब है यह राज आज का इंसान थोड़ा समझ तो ले।

आज हम जानते हैं कि मनुष्य अपना अहम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए शिक्षा द्वारा पढ़कर डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, नेता, अभिनेता अथवा सन्यासी बनकर ही रहना चाहता है लेकिन हम जानते हैं कि इतने बड़े-बड़े पद प्राप्त करके भी ये सब जीवन में सुखी नहीं हैं। इनको भी तन का रोग, मन की अशान्ति, धन की कमी, प्रजा की चिन्ता अथवा कोई शारीरिक बीमारी होकर कोई न कोई दुःख तो इनको भी लगा ही रहता है, अतः बड़े-बड़े पद प्राप्त करके भी पूर्ण सुखी ये भी नहीं हो पाते हैं अर्थात् जीवन के अहम लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते। क्योंकि जीवन का अहम लक्ष्य तो है सम्पूर्ण शान्ति, सम्पूर्ण आनंद, सम्पूर्ण प्रेम अथवा सम्पूर्ण पवित्रता है अर्थात् श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण के पद की प्राप्ति है, जहाँ तक आज का इंसान नहीं पहुँच पाता है।

अतः हम अपने चित्त और मन में परिवर्तन लाकर विकार रूपा ज़हर को जीवन से बाहर निकालकर, अपनी आत्मा में स्थित अनादि संस्कार जो सुषुप्त अवस्था में पड़े हैं, जो आत्मा के स्वधर्म कहलाते हैं, उन्हें 'इमर्ज' कर अपने जीवन को खुशियों से भर सकते हैं। तो हम ईश्वर को साक्षी रखकर इस बात को आज से ही दृढ़ता ले कि हम अपने आत्मा के स्वधर्म, सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम, शक्ति, ज्ञान एवं पवित्रता को 'इमर्ज' कर दुनिया में बांटेंगे तथा मन, वचन और कर्म में ऐसी दृढ़ता लायेंगे कि हम एक न एक दिन नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनकर ही दिखलायेंगे, बनकर ही दिखलायेंगे।

-ब. वुं. कन्हैया, चित्तौड़गढ़, पूर्व स. महप्रबन्धक दूरसंचार विभाग - भारत सरकार।



बन जाता है और जब-जब मन पाप दसामय होता है पापी हो जाता है अतः संसार में न तो कोई व्यक्ति सनातन पुण्यात्मा है और न कोई सनातन पापी। लेकिन जब-जब हम प्रेम के क्षणों में गुजरते हैं पुण्यात्मा होते हैं और जितनी बार क्रोध में होते पापी हो जाते हैं। अतः संसार में सब एक जैसे पुण्यात्मा, सब एक जैसे पापी हैं। लेकिन जो आत्मा अपने चित्त को सुधारने के लिए, अपने मन को सुधारने के लिए सजग हो जाए, तो वही पुण्यपथ का सच्चा-सच्चा राही होता है। वह न कोई

हिन्दू, न कोई मुसलमान, न सिक्ख और न कोई ईसाई होता है। जिसने अपने मन को पहचाना, वह यह जान जाता है कि ये सब तो ऊपर-ऊपर के लेबल हैं, रबड़ स्टाम्प मात्र हैं। आदमी तो अपने ही मन का अनुयायी होता है और जिस दिन उसे यह बात समझ आ गई, उस दिन हर ईंसान इस बात के लिए सजग होगा कि मैं भी किसी धर्म का अनुयायी बनूँ। एक ऐसे धर्म का अनुयायी जो मेरा अपना स्वधर्म हो, मेरी प्रकृति और मेरे

उसी में अंकुरित होकर एक सुंदर-सा पौधा और फूल बन जाता है, फलता और फूलता है, सुंदर-सुंदर कलियाँ इसमें अपनी जगह बनाती हैं, खिलती और खिलखिलाती हैं। खुद को भी और अपने संग में आने वालों में भी अपना रंग भरती है अर्थात् दुनिया वालों को खुशबू से भरपूर करती है। फिर एक दिन मुस्कराते हुए उसी प्रकृति की गोद में हमेशा के लिए समा जाती है। तो इस प्रकार गाय, भैंस का गोबर जिसे हमने गंदगी कहा, खुशबू

ज्युरिस्ट विंग द्वारा कॉन्फ्रेंस का आयोजन

ब्रह्माकुमारीज के ज्युरिस्ट विंग द्वारा 29 मई से 02 जून 2015 तक ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माउण्ट आबू के शांतिवन परिसर में ज्युरिस्ट कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया जा रहा है। इस कॉन्फ्रेंस में एडवोकेट्स, जज, सेल्स टैक्स, इनकम टैक्स प्रैक्टिसनर्स/कमिश्नर्स, सी.ए., पुलिस ऑफिसर्स, लॉ कॉलेज प्रोफेसर्स तथा इससे संबंधित कोई भी भाई बहन भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- ब्र.कु. लता आर. अग्रवाल मो.- 9414154670



वारंगल। तेलंगाना के नवनिर्वाचित डिप्युटी चीफ मिनिस्टर कादियम श्री हरी को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. श्रीलता, ब्र.कु. सुधाकर तथा ब्र.कु. वसन्ता।



राजपुर-म.प्र.। ब्र.कु. सूर्य के राजपुर आगमन पर पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित करते हुए पूर्व स्वास्थ्य मंत्री एवं क्षेत्रीय विधायक बाला बच्चन जी। साथ है ब्र.कु. प्रमिला।



रीवा-म.प्र.। 'व्यसन मुक्ति हेतु प्रबुद्ध वर्ग की भूमिका' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं कलेक्टर राहुल जैन, नगर निगम आयुक्त शैलेन्द्र शुक्ल, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।



भरतपुर-राज.। विश्वशांति भवन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं राव राजा रघुराज सिंह, नवनिर्वाचित मेयर शिवा सिंह मौर, ब्र.कु. पूनम तथा ओम प्रकाश शर्मा, पूर्व प्राचार्य, आर.डी. गर्ल्स कॉलेज।



मांडवी। गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में आरोग्य एवं बांधकाम विभाग के मंत्री नितिन भाई पटेल व सूरत के कलेक्टर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. गायत्री, ब्र.कु. दीना।



पारला-खमंडी। आध्यात्मिक कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए विधायक के. सूर्याराव। साथ है वरिष्ठ समाज सेविका जय ललिता, ब्र.कु. मंजु तथा ब्र.कु. माला।



कलायत-हरियाणा। सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के बाद दैनिक जागरण के वरिष्ठ पत्रकार डॉ. राजेन्द्र छावरा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. दीपक, माउण्ट आबू। साथ है ब्र.कु. रेखा व ब्र.कु. कविता।



श्रीगंगानगर-राज.। जगदम्बा अंध विद्यालय के अध्यक्ष श्री श्री स्वामी परमहंस ब्रह्मदेव जी को ईश्वरीय साहित्य भेंट कर ईश्वरीय सेवाओं को जानकारी देते हुए ब्र.कु. दत्तात्रय, माउण्ट आबू।



भरतपुर-राज.। मास्टर्स ऐथलेटिक्स एसोसिएशन राज. द्वारा आयोजित 'रन फॉर क्लोन भरतपुर, हेल्थी भरतपुर एंड एज्युकेटेड भरतपुर' कार्यक्रम में आयकर आयुक्त सतीश शर्मा, आई.ई.एस. को माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के बाद ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. कविता।



मुवई। अंतर्राष्ट्रीय मेडिकल कॉन्फ्रेंस में डॉ. प्रो. मेहेर मुस, डॉ. एस. नागेन्द्रन तथा डायरेक्टर कार्डिसल रशियन कल्चर द्वारा ब्र.कु. डॉ. रमेश, ब्र.कु. डॉ. शोभना तथा ब्र.कु. डॉ. गीताजली को विविध प्रकार के 9 पुरस्कार तथा स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया गया।

‘मैं’ और बाधाए...!

बाधाओं को दूर करना

एक अंग्रेजी कहावत है, “शांत समुद्र में नाविक कुशल नहीं बन पाते।” बाद में आसान लगने वाली सारी चीज़ें शुरु में मुश्किल लगती हैं। हम अपनी समस्याओं से मुँह नहीं मोड़ सकते। केवल हारने वाले कोशिश छोड़ कर मैदान से हट जाते हैं। बाधाओं को दूर करके आगे बढ़ने वाले लोग उन लोगों को तुलना में अधिक सुरक्षित होते हैं, जिन्होंने कभी उनका सामना ही नहीं किया। हम सभी को कभी न कभी दिक्कतों का सामना करना ही पड़ता है। उनकी वजह से कई बार हम मायूस हो जाते हैं। निराशाओं का सामना सबको करना पड़ता है, पर जीतने वाले हताश नहीं होते। ऐसे हालात का जवाब दृढ़ता ही है।

अधिकतर लोग ठीक उस समय हार मान लेते हैं, जब सफलता उन्हें मिलने ही वाली होती है। विजय-रेखा बस एक कदम की दूरी पर होती है, तभी वे कोशिश बंद कर देते हैं। वे खेल के मैदान से अंतिम मिनट में हट जाते हैं, जबकि उस समय जीत का निशान उनसे केवल एक फुट के फासले पर होता है।

हम सफलता को कैसे मापते हैं?

असली सफलता किसी काम को अच्छी तरह करने, और उसके लक्ष्य को हासिल करने के एहसास से मापी जाती है।

सफलता इस बात से नहीं मापी जाती कि हमने ज़िन्दगी में कौन-सा ओहदा हासिल किया है, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि हमने वह मुकाम कितनी रुकावटों को दूर करके हासिल किया है। सफलता इस बात से भी नहीं मापी जाती कि हम ज़िन्दगी में दूसरे लोगों की तुलना में कैसी उपलब्धियाँ हासिल कर रहे हैं, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि हम अपनी क्षमताओं की तुलना में कितनी उपलब्धियाँ हासिल कर रहे हैं। सफल लोग अपने आपसे मुकाबला करते हैं। वे अपना खुद का रिकॉर्ड बेहतर बनाते हैं, और उसमें लगातार सुधार लाते रहते हैं।

सफलता इस बात से नहीं मापी जाती कि हमने ज़िन्दगी में कितनी ऊँचाई हासिल की है, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि हम कितनी बार गिर कर उठे हैं। सफलता का आकलन गिर कर उठने की इस क्षमता से ही किया जाता है।

सफलता की हर कहानी महान असफलताओं की भी कहानी है असफलता, सफलता हासिल करने का राजमार्ग है। आई.बी.एम. के टॉम वाटसन, सीनियर का कहना, “अगर आप सफल होना चाहते हैं, तो अपनी असफलता की दर दूनी कर दीजिए।”

अगर हम इतिहास पढ़ें, तो पाएंगे कि सफलता की हर कहानी के साथ महान असफलताएँ भी जुड़ी हुई हैं। लेकिन लोग उन असफलताओं पर ध्यान नहीं देते। वे

केवल नतीजों को देखते हैं और सोचते हैं कि उस आदमी ने क्या किस्मत पाई है, “वह सही वक्त पर, सही जगह रहा होगा।” एक आदमी की ज़िन्दगी की कहानी बड़ी मशहूर है। यह आदमी 21 साल की उम्र में व्यापार में नाकामयाब हो गया; 22 साल की उम्र में वह एक चुनाव हार गया; 24 साल की उम्र में उसे व्यापार में फिर असफलता

सफलता की सारी कहानियों के साथ महान असफलताओं की कहानियाँ भी जुड़ी हुई हैं। फर्क केवल इतना था कि हर असफलता के बाद वे जोश के साथ फिर उठ खड़े हुए। इसे पीछे धकेलने वाली नहीं, बल्कि आगे बढ़ाने वाली नाकामयाबी कहते हैं। हम सीखते हुए और अपनी असफलताओं से सबक लेते हुए आगे बढ़ते हैं।



मिली; 26 साल की उम्र में उसकी पत्नी मर गई; 27 साल की उम्र में उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया; 34 साल की उम्र में वह कांग्रेस का चुनाव हार गया; 45 साल की आयु में उसे सीनेट के चुनाव में हार का सामना करना पड़ा; 47 साल की उम्र में वह उपराष्ट्रपति बनने में असफल रहा; 49 साल की आयु में उसे सीनेट के एक और चुनाव में नाकामयाबी मिली; और वही आदमी 52 साल की उम्र में अमरीका का राष्ट्रपति चुना गया। वह आदमी अब्राहम लिंकन था। क्या आप लिंकन को असफल मानेंगे? वह शर्म से सिर झुका कर मैदान से हट सकते थे, और अपनी वकालत फिर शुरू कर सकते थे। लेकिन लिंकन के लिए हार केवल एक भटकाव थी, सफर का अंत नहीं।

टायोड ट्यूब के आविष्कारक ली डे फॉरेस्ट पर सन् 1913 में जिला अटार्नी ने यह इलज़ाम लगाते हुए मुकदमा दायर किया कि उन्होंने थोखाथड़ी की है। जिला अटार्नी का कहना था कि उन्होंने अपनी कंपनी के शेयर खरीदवाने के लिए लोगों को यह कह कर गुमराह किया है कि वह इंसान की आवाज़ अटलांटिक के पार तक पहुँचा सकते हैं। उन्हें सर्रेआम अपमानित किया गया। लेकिन हम सोच सकते हैं कि उन्होंने वह आविष्कार न किया होता, तो हम आज कहाँ होते।

10 दिसंबर, 1903 को न्यूयॉर्क टाइम्स के संपादकीय में राइट बंधुओं की सोच पर सवालिया निशान लगाया गया, जो उड़ सकने

वाली हवा से भी हल्की मशीन का आविष्कार करने की कोशिश कर रहे थे। इसके एक हफ्ते बाद ही किट्टी हॉक में ‘राइट बंधुओं’ ने अपनी मशहूर उड़ान भरी।

65 साल की उम्र में कर्नल सेडर्स के पास पूँजी के नाम पर एक पुरानी कार और सामाजिक सुरक्षा योजना से मिला 100 डॉलर का चेक ही था। उन्होंने महसूस किया कि अपनी हालत बेहतर बनाने के लिए उन्हें कुछ करना चाहिए। उन्हें अपनी माँ का फ्राईड चिकन बनाने का नुस्खा याद आया, और वह उसे बेचने के लिए निकल पड़े। क्या हम जानते हैं कि पहला ऑर्डर हासिल होने से

पहले उन्हें कितने दरवाज़ों को खटखटाना पड़ा? एक अंदाज़ के मुताबिक पहला ऑर्डर हासिल होने से पहले उन्होंने हजारों दरवाज़े खटखटाए। हममें से ज्यादातर लोग तीन बार, दस बार, अधिक से अधिक सौ बार कोशिश करके हार मान लेते हैं और उसके बाद कहते हैं कि हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की। वाल्ट डिज़्नी जब युवक थे तो कई अखबारों के संपादकों ने उन्हें यह कह कर लौटा दिया कि उनमें प्रतिभा है ही नहीं। एक दिन एक चर्च के पादरी ने उन्हें कुछ कार्टून बनाने का काम दिया। डिज़्नी चर्च में जिस शोड के नीचे काम कर रहे थे, वहाँ चूहे उधम बचा रहे थे। एक चूहे को देखकर उनके मन में एक कार्टून बनाने का ख्याल आया और वहाँ से मिकी माउस का जन्म हुआ।

सफल लोग महान काम नहीं करते, वे छोटे-छोटे कामों को महान ढंग से करते हैं।

एक दिन ऊंचा सुनने वाला चार साल का लड़का स्कूल से घर लौटा, तो उसकी जेब में उसके शिक्षक का एक नोट रखा था, जिस पर लिखा था, “आपका टॉपी इतना मंदबुद्धि का है कि वह कुछ नहीं सोख सकता। उसे स्कूल से बाहर निकाल लीजिए।” उसकी माँ ने वह नोट पढ़ कर जवाब दिया, “मेरा टॉपी इतना मंदबुद्धि नहीं है कि कुछ सोख न सके। मैं उसे खुद पढ़ाऊंगी।” और वही टॉपी एक दिन बड़ा होकर महान थॉमस एडीसन बना। वह स्कूल में केवल तीन महीने पढ़ सके थे।

ब्रह्माकुमारीज़ के यूथ फेस्टिवल के लॉन्चिंग से महाराष्ट्र की कोल्हापुर कलानगरी में स्वच्छ स्वस्थ और स्वर्णिम भारत की क्रांति का शुभारंभ



कोल्हापुर। 'स्वच्छ स्वस्थ स्वर्णिम' भारत अभियान का शुभारंभ करते हुए विधायक राजेश क्षीरसागर, मनोज कुमार शर्मा, ब.कु. चंद्रिका, ब.कु. सुनंदा, ब.कु. कृति तथा अन्य। सभा में गणमान्य जन।

कोल्हापुर। छत्रपति शिवाजी महाराज के पदसंर्ष से और राजर्षि शाहू महाराज महान क्रांतिकारी सामाजिक कार्य से पुनीत दक्षिण काशी नाम से प्रख्यात महाराष्ट्र की कोल्हापुर कलानगरी में ब्रह्माकुमारीज़ युवा प्रभाग कोल्हापुर द्वारा 'स्वच्छ स्वस्थ स्वर्णिम' भारत अभियान का राज्य स्तरीय शुभारंभ किया गया। शहर के विधायक मा. राजेश क्षीरसागर, जिला पुलिस प्रमुख मनोज कुमार शर्मा, ब्रह्माकुमारीज़ यूथ विंग की नेशनल को-ऑर्डिनेटर ब.कु. चंद्रिका, ब.कु. सुनंदा, ब.कु. कृति तथा गोवा की ब.कु. शोभा की उपस्थिति में इस प्रोजेक्ट का लॉन्चिंग

कार्यक्रम संपन्न हुआ। मेंडिटेशन, को जीवन का स्वर्णकाल बताया और नृत्य, आतिशबाजी, गुब्बारे और दीप इस बात पर खेद भी जताया कि आज



उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुति देते हुए युवा कलाकार प्रज्वलन से इस कार्यक्रम को शानदार शुरुआत हुई। प्रमुख मार्गदर्शिका ब.कु. चंद्रिका ने अपनी अमृतवाणी से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने युवाकाल का भोग बनती जा रही है। वस्तुतः युवा पीढ़ी के अंदर परिवर्तन शक्ति अगाध है जिसे उन्हें महसूस करना चाहिए। युवकों को जीवन में सफल होने के लिए समय, संकल्प, संबंध और संपत्ति इन चार बातों को बचाना चाहिए। उन्होंने बताया कि अंतर्बाह्य स्वच्छता स्वस्थता और स्वर्णिमता के स्वन को यथार्थ बनाने के लिए आंतरिक शक्ति और विश्वास की आवश्यकता है। इसलिए युवकों को हीन भावना से बचकर अपनी विशिष्टता को पहचानकर आगे बढ़ाना चाहिए। साथ ही समय का

महत्व समझकर सकारात्मक संकल्पों पर चलना चाहिए, और कैरेक्टर की हिफाजत करनी चाहिए। विधायक राजेश क्षीरसागर ने बताया कि यह फेस्टिवल निश्चित ही हमारे युवकों के लिए प्रेरणादायी होगा। जिला पुलिस प्रमुख मनोज कुमार शर्मा ने कहा कि जेल के कैदियों को राजयोग की सख्त जरूरत है। इस अवसर पर अनेकानेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाने वाले कोल्हापुर के क्रीडा कला संगीत आदि क्षेत्र के युवाओं का प्रमुख अतिथियों के हाथों सत्कार किया गया।



आप ऐसा जादू कर दो कि मैं आपसे मिल सकूँ। और वो मिलन का दिन आ गया। जैसे शिवबाबा ने मेरी वातें सुन ली हैं। मैंने जो भी संकल्प चलाये थे, बाबा ने पूरे किये। ऐसा कहना है त्रिगुणा जे. साणजा का, जो मोरवी-गुजरात की रहने वाली हैं। वो पिछले डेढ़ साल से ज्ञान में चल रही हैं। उनसे वातचीत के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं।

सबसे पहले मेरी माँ लगभग 9-10 साल से ज्ञान में चल रही हैं। ज्ञान मिलने से पहले मैं अपनी माँ का इस ज्ञान के विषय में बहुत विरोध करती थी।

— जैसे बाबा कहते हैं, जब ड्रामा में होता है तभी हम पार्ट बजा सकते हैं। ऐसा मेरे साथ भी हुआ। एक बार छुट्टियों में मैं अपने मायके में गई थी। तभी सेंटर पर कोर्स शुरू हुआ।

मधुर अनुभव मधुवन में ...।

मेरी माँ ने आकर मुझसे पूछा कि कल सुबह तू मेरे साथ मुझे छोड़ने के लिए चलेगी? मैं मान गई और बोली चलीगी। फिर मैं सेंटर पर पहुंची तो माँ ने कहा आज कोर्स शुरू हुआ है, आप नीचे के रूम में बैठो, मैं मुरली सुनती हूँ। मैं तो नीचे कोर्स करने बैठ गई और अपने ज्ञान का पहला पाठ जो बाबा हमें सिखाते हैं "मैं कौन हूँ" का ज्ञान मिला। सुनकर बहुत अच्छा लगा कि मैं आत्मा हूँ। अपनी रोजमर्रा की लाईफ में हम इतने खो जाते हैं कि जो अपने आप को भूले हुए होते हैं। जब मैंने समझा कि मैं तो एक खूबसूरत चैतन्य सत्ता हूँ, यह जानकर मुझे बहुत ही अच्छा लगा। अपनी अभिलाषा के कारण मैं दूसरे दिन भी खुशी-खुशी क्लास में पहुंच गई। कभी-कभी व्यर्थ में चली जाती तो बाबा मुरली से अटेंशन दिलाते थे। मुरली से मेरी कई समस्या हल हो जाती थी। पहले मैं रात को बहुत डर जाती थी, पर जब से बाबा की गोदी में सोने लगी हूँ मुझे कभी डर नहीं लगता।

मैं सोचती थी बाबा, मेरा कोर्स हो गया, मुरली भी सुनती हूँ, ज्ञान भी अच्छा लगता है लेकिन मुझे आपसे मिलना है। आप ऐसा जादू कर दो कि बच्चों को छुट्टियाँ भी साथ में हो और मिलन भी, ताकि मैं आपसे मिल सकूँ। और वो मिलन का दिन आ गया। जैसे बाबा ने मेरी बातें सुन लीं। मैंने जो भी संकल्प चलाये थे, बाबा ने पूरे किये। "25 दिसंबर"

बाबा से मिलने का समय आया। मेरा पहली बार मधुवन जाने का जो सपना था वो मानो साकार होने वाला था। मैं बच्चों को छोड़कर कैसे जाऊँ... लेकिन बाबा कहता है ना "बच्चे तुम चिंता मत करो मैं बैठा हूँ" तो बस मैं अपने बच्चों को अपने परिवार और बाबा के साथ छोड़कर मधुवन आ गई।

मधुवन आकर मुझे सबसे पहले शांति का अनुभव हुआ जिसका अनुभव मैंने कभी नहीं किया था। यहाँ के ब.कु. भाई-बहनों की सेवा देखकर मैं दंग रह गई। यहाँ का पॉजीटिव वायब्रेशन और पवित्र वातावरण शांति का अनुभव कराने में बहुत मदद करता है। मैंने कभी कोई ऐसी संस्था नहीं देखी जो इतनी अच्छी तरह संचालित होती हो। सलाम करती हूँ मैं समर्पित भाई-बहनों को जो यहाँ इतनी अच्छी सेवा करते हैं।

मुरली में बाबा कहते हैं "मधुवन तुम्हारे बाप का घर है" यह बात सच होती नज़र आई। यहाँ का सुबह से शाम तक का जो कार्यक्रम है वो मुझे बहुत पसंद आया। और फिर आ गई वो घड़ी जिसका मुझे इंतज़ार था बापदादा से मिलने का।

मुझे ऐसा लगता था कि बाबा पूरे हॉल में सिर्फ मुझे ही देख रहे हैं। फिर तो बाबा के साथ रूह-रूहाने हुई और मैं बाबा का लकी सितारा, रूहे गुलाब बन गई।



ब्रह्मपुर-ओडिशा। 'विश्व शांति दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए डॉ. प्रफुल्ल चन्द्र शाहू। साथ हैं ब.कु. लक्ष्मी, ब.कु. मंजु तथा ब.कु. लहर।



सोलापुर-महारा। '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर महानगरपालिका अध्यक्ष सुशीला ताई आबुटे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. सोमप्रभा तथा ब.कु. करजगी। साथ हैं ब.कु. रामप्रकाश, म्युनिसिपल कमिश्नर चन्द्रकांत गुडेवार, डॉ. शिवपुजे तथा ब.कु. मस्के।



दिल्ली-आर.के. पुरम। 'घर गृहस्थ में सुखमय जीवन' कार्यक्रम में संबोधित करते हुए ब.कु. ज्योति



भुवनेश्वर-ओडिशा। गणतंत्र दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में राज्यपाल माननीय एस.सी. जमीर व मुख्यमंत्री माननीय नवीन पटनायक को ईश्वरीय संदेश के साथ ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लीना। साथ हैं ब्र.कु. विजया तथा अन्य।



सितारगंज-उत्तराखण्ड। लोहरी मेले में आयोजित 'चरित्र निर्माण प्रदर्शनी' का उद्घाटन करते हुए वरीष्ठ भाजपा नेता सुरेश पपनेजा तथा उद्योगपति ननक चन्द्र मिंगलानी। साथ हैं ब्र.कु. सरोज तथा अन्य।



मुम्बई-घाटकोपर। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता अक्षय कुमार के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. नलिनी।



मुम्बई-सांताक्रूज़। 'वन गॉड, वन वर्ल्ड, वन फैमिली' का संदेश लिए हुए निकाली गई पीस रैली के दौरान उपस्थित हैं ब्र.कु. मीरा तथा अन्य राजयोगी ब्र.कु. भाई बहनें।



सुरत-अडाजन। 10वीं के विद्यार्थियों को 'एम्पावरमेंट ऑफ माइंड' के बारे में बताते हुए ब्र.कु. रुषि।



चिखली-महा। आदर्श विद्यार्थि के प्रिन्सिपल मगन देशमुख साहब एवं प्रोफेसर श्रीसागर को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. दत्तात्रय, माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. सुरेखा।

योग ही स्वयं को सुसंस्कृत करने का विज्ञान

अर्जुन भगवान से एक प्रश्न पृष्ठता है कि मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाने का कारण क्या है? उसका मार्ग कौनसा है? भगवान ने उसका उत्तर दिया कि विषयों का चिंतन करने वाला पुरुष, विषयों और विकारों में आसक्त हो जाता है, और आसक्ति से कामना उत्पन्न होती है, कामना पूर्ति में व्यवधान उत्पन्न हो से क्रोध उत्पन्न होता है, क्रोध से अविवेक उत्पन्न होता है, अविवेक से स्मरण शक्ति भ्रमित हो जाती है, जब स्मृति भ्रमित हो जाती है तो योग परायण बुद्धि भी नष्ट हो जाती है। अतः निष्काम कर्मयोग को बुद्धि योग भी कहा जाता है। इसलिए बुद्धि का योग ईश्वर से जोड़ने की बात कही गयी है। तब हम अपनी सारी कमजोरियों के ऊपर विजयी हो सकते हैं और योग परायण बुद्धि विकसित कर सकते हैं। फिर अंत में भगवान ने कहा कि योग साधना रहित पुरुष के अन्तःकरण में निष्काम कर्म युक्त बुद्धि नहीं होती है। अयुक्त के अन्तःकरण में भाव नहीं होता है और भाव रहित पुरुष को शांति नहीं मिलती है। अशांत पुरुष को सुख अथवा सनातन शाश्वत की प्राप्ति नहीं हो सकती है। अर्थात् दूसरे शब्दों में कहें कि योग माना ही स्वयं को सुसंस्कृत करने का विज्ञान या स्वयं के भीतर अपनी इंद्रियों को सुसंस्कृत करने का विज्ञान है इसलिए योग को कला और विज्ञान दोनों कहा जाता है। विज्ञान क्यों कहा गया कि जहाँ पर तर्क संगत रूप से हर बात को समझाया जाता है। स्टेप बाई स्टेप उसको स्पष्ट किया जाता है। भगवान ने अर्जुन को हर बात इतनी लॉजिकली स्पष्ट की हुई है, तब अर्जुन का वो अज्ञान दूर होता है इसलिए योग को स्वयं को सुसंस्कृत करने का विज्ञान कहा गया है। परेशान मन वाला व्यक्ति, कभी खुश नहीं रह सकता है। अपनी आत्म उन्नति के प्रति उदासीन

रहने वाला व्यक्ति वास्तव में अपने ही विनाश के मार्ग पर आगे बढ़ता है। इसलिए स्वयं को जितना 'स्व अनुशासन' में ला सको उतना ही हम अपने जीवन में योग की सिद्धि को प्राप्त करेंगे और शिखर पर पहुंचकर जीवन की ऊचाईयों को छू सकते हैं। ये अनुभव है। तीसरे अध्याय में पहले श्लोक से लेकर आठवें श्लोक तक ज्ञानयोग और कर्मयोग की आवश्यकता का वर्णन किया गया है। नौवें श्लोक से लेकर सोलहवें श्लोक तक यज्ञ आदि कर्म और उसकी आवश्यकता का वर्णन किया गया है।

सत्रहवें श्लोक से लेकर चौबीसवें श्लोक तक ज्ञानवान और परमात्मा के लिए लोक संग्रह अर्थ कर्म करने की आवश्यकता

बतायी गयी है। पच्चीसवें श्लोक से लेकर पैतीसवें श्लोक तक अज्ञानी और ज्ञानवान के लक्षण तथा राग-द्वेष रहित होकर कर्म करने की प्रेरणा दी गई है और छत्तीसवें श्लोक से लेकर तेतालीसवें श्लोक तक काम को निरोध का विषय बताया गया है कि कैसे यही काम और क्रोध अग्नि के समान भोग भोगने से, कभी न तुल्य होने वाले बड़े पापी है। काम, क्रोध आदि से ज्ञान भी ढूँक जाता है, खत्म हो जाता है व नष्ट हो जाता है।

यहाँ अर्जुन सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न भगवान के आगे जो रखता है वह यह कि ज्ञानयोग श्रेष्ठ है या कर्मयोग श्रेष्ठ है? अर्जुन के जितने भी प्रश्न वास्तव में देखे जाएं तो ये हम सभी के

मन के प्रश्न हैं कि ज्ञानयोग श्रेष्ठ है या कर्मयोग श्रेष्ठ है?

भगवान ने बहुत सुंदर जवाब दिया - ज्ञानियों के लिए ज्ञान मार्ग और योगियों के लिए निष्काम कर्म मार्ग श्रेष्ठ है। दोनों ही मार्गों के अनुसार कर्म तो करना ही पड़ता है। कर्म अनिवार्य है, ये नहीं कि ज्ञानियों को कर्म नहीं करना पड़ता है। ज्ञानियों को भी अपना निजी कर्म तो करना ही पड़ता है। सभी पुरुष प्रकृति से उत्पन्न हुए गुणों द्वारा विवश होकर कर्म करते हैं। जो पुरुष

गीता ज्ञान का

द्राध्यात्मिक

बहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा



मन से इंद्रियों को वश में करके, अनासक्त होकर कर्मोंद्वारा से कर्मयोग का आचरण करता है तथा अपने शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते हुए आध्यात्मिक पुरुषार्थ में उन्नति करता है, वही श्रेष्ठ है। भावार्थ ये है कि ज्ञानियों के लिए भी कर्म, आध्यात्मिक पुरुषार्थ अर्थात् उन्नति करना, यही उसका निजी कर्म है और कर्मयोगी के लिए भी यही है। आध्यात्मिकता का मतलब क्या है? आध्यात्मिकता का मतलब है अध्ययन द्वारा आत्म-उन्नति को प्राप्त करना। किस बात का अध्ययन करना? गीता में भगवान ने जो ज्ञान दिया है जितना हम उसका अध्ययन करते हुए अपने पुरुषार्थ में आगे बढ़ते हैं और उन्नति को प्राप्त करते हैं, उसे ही आध्यात्मिकता कहा जाता है।

आनंद में रहने.... पेज 2 का शेष...

पूछा: 'मैं पहले आनंद क्या है वो जानना चाहता हूँ। क्योंकि आनंद को जाने बिना उसे पा भी कैसे सकते हैं?'

वो फकीर फिर हंसने लगा और कहने लगा कि मुझे लगता है कि जो बाहर है उसे खोज सकते हैं, लेकिन जो खुद के अंदर है, उसे कैसे खोजा जा सकता है?'

उसके बाद उस वृद्ध फकीर ने अपनी झोली में से दो फल बाहर निकाला और उस युवक को कहा कि 'मैं आपको दो फल देता हूँ, दोनों फल वास्तव में अद्भुत हैं। पहला फल आप खायेंगे तो आपको पता चलेगा कि आनंद क्या है। और दूसरा फल खायेंगे तो आप स्वयं ही आनंदित हो जायेंगे। लेकिन याद रखना, दोनों फल में से आप एक ही खा सकेंगे। क्योंकि दोनों में से कोई भी एक फल खायेंगे तो दूसरा अदृश्य हो जायेगा, और ये भी ध्यान रखना कि दूसरा फल खाने के बाद आनंद क्या है, यह आप जान नहीं सकेंगे। अब तय आपको करना है! आप इतने लम्बे समय से भटक रहे हैं, सिर्फ वर्षों से नहीं, लेकिन जन्म-जन्मांतर से भटक रहे हैं लेकिन आनंद को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। क्योंकि आनंद का ज्ञान, ये आनंद नहीं है। आनंद को जानना और आनंदित न रहना, यही दुःख का कारण है। आनंद माना ही

ज्ञान और अज्ञान दोनों से मुक्ति, मन के बंधन से मुक्ति। मन मुक्त होने से मानव स्वयं ही स्वयं में आ जाता है। और यही आनंद है

भूतकाल की दुःखद घटनाओं को चित्त पर न रखें। दूसरों के दोषों का स्मरण और उन पर विचार करना भूल जायें। जगत जैसा है वैसा स्वीकार कर, उस पर ज्यादा अपेक्षा न रखें।

और यही मोक्ष। आनंद के बारे में कबीर कहते हैं कि, 'भीतर वस्तु धरी नहीं सूझी बाहर खोजन जासी।' जो वस्तु अंदर पड़ी है वो तुम बाहर खोजने जाओगे तो कहीं से मिलेगी? हमें व्यस्त रहना आता है, मोहग्रस्त भी होना आता है, लेकिन अंदर के आनंद में आनंदित होना नहीं आता। 1. आनंदित

रहने का नहीं, प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहने को आदत डालें।

2. परमशक्ति में श्रद्धा व विश्वास रखें, तब वे सदा आपके आस-पास में रहकर मदद करेगा ही।

3. आनंद का स्रोत दूसरे को नहीं मानें। जो सुखी करता है, वह दुःखी भी कर सकता है। इसलिए, धोखा, प्रपंच, विश्वासघात या बेवफाई की घटनाओं में विचलित न हों। इस परिवर्तनशील संसार में कुछ भी सदा के लिए नहीं है।

4. यह व्यूँ हुआ, ऐसा कैसे हुआ उसको फरीयाद न कर जो हुआ उसे सहर्ष स्वीकार करें।

5. भूतकाल की दुःखद घटनाओं को चित्त पर न लायें। जगत जैसा है वैसा स्वीकार कर



दिल्ली-लोधी रोड। ओ.एन.जी.सी. के युवा अधिकारियों हेतु 'आंतरिक शक्तियों का विकास व तनाव मुक्त जीवन शैली' विषय पर कार्यशाला के परचात् समूह चित्र में ब्र.कु. पीयूष व अन्य प्रतिभागी।

कथा सरिता

भक्ति

एक भक्त इमली के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान का भजन कर रहा था। एक दिन वहाँ नारद जी महाराज आ गये। उस भक्त ने नारद जी से कहा कि आप इतनी कृपा करें कि जब भगवान के पास जायें तब उनसे पूछ लें कि वे मुझे कब मिलेंगे?

नारद जी भगवान के पास गये और पूछा कि अमुक स्थान पर एक भक्त इमली के वृक्ष के नीचे बैठा है और भजन कर रहा है, उसको आप कब मिलेंगे? भगवान ने कहा कि उस वृक्ष के जितने पत्ते हैं, उतने जन्मों के बाद मिलूँगा।

ऐसा सुनकर नारद जी उदास हो गये। वे उस भक्त के पास गये, पर उससे कुछ कहा नहीं। भक्त ने प्रार्थना की कि भगवान ने क्या कहा है, कह तो दो। नारद जी बोले कि तुम सुनोगे तो हताशा हो जाओगे।

जब भक्त ने बहुत आग्रह किया, तब नारद जी बोले कि इस वृक्ष के जितने पत्ते हैं, उतने जन्मों के बाद भगवान की प्राप्ति होगी। भक्त ने उत्सुकता से पूछा कि क्या भगवान ने खुद ऐसा कहा है? नारद जी ने कहा कि हाँ, खुद भगवान ने कहा है।

यह सुनकर वह भक्त खुशी से नाचने लगा कि भगवान मुझे मिलेंगे, मिलेंगे, मिलेंगे!! क्योंकि भगवान के वचन झूठे नहीं हो सकते। इतने में ही भगवान वहाँ प्रकट हो गये! नारद जी ने देखा तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ।

वे भगवान से बोले कि महाराज! अगर यही बात थी तो मेरी फज़ीहत क्यों करायी? आपको जल्दी मिलना था तो मिल जाते। मुझसे तो कहा कि इतने जन्मों के बाद मिलूँगा और आप अभी आ गये! भगवान ने कहा नारद! जब तुमने इसके विषय में पूछा था, तब यह जिस चाल से भजन कर रहा था, उस चाल से तो इसको उतने ही जन्म लगते, परन्तु अब तो इसकी चाल ही बदल गयी!

यह तो 'भगवान मुझे मिलेंगे' इतनी बात पर ही मस्ती से नाचने लग गया! इसलिए मुझे अभी ही आना पड़ा।

कारण कि उद्देश्य की सिद्धि में जो अटल विश्वास, अनन्यता, दृढ़ता, उत्साह होता है, उससे भजन तेज हो जाता है।

सम्मान

ये कहानी एक ऐसे व्यक्ति की है जो एक फ्रीज़र प्लांट में काम करता था। वह दिन का अंतिम समय था व सभी घर जाने को तैयार थे तभी प्लांट में एक तकनीकी समस्या उत्पन्न हो गई और वह उसे दूर करने में जुट गया। जब तक वह कार्य पूरा करता तब तक अत्यधिक देर हो गई। दरवाज़े सील हो चुके थे व लाइटें बुझा दी गईं।

बिना हवा व प्रकाश के पूरी रात आईस प्लांट में फँसे रहने के कारण उसकी बर्फीली कब्रगाह बना तय था। घण्टे बीत गए, तभी उसने किसी को दरवाज़ा खोलते पाया। क्या यह एक चमत्कार था? सिवियोरिटी गार्ड टॉर्च लिए खड़ा था व उसने उसे बाहर निकलने में मदद की। वापस आते समय उस व्यक्ति ने सिवियोरिटी गार्ड से पूछा "आपको कैसे पता चला कि मैं भीतर हूँ?" गार्ड ने उत्तर दिया "सर, इस प्लांट में 50 लोग काम करते हैं, पर सिर्फ एक आप है जो सुबह हेल्थो व शाम को जाते समय बाय करते हैं।"

आप सुबह ड्यूटी पर आये थे लेकिन शाम को आप बाहर नहीं गये। इससे मुझे शंका हुई और मैं देखने चला गया। वह व्यक्ति नहीं जानता था कि उसका किसी को छोटा सा सम्मान देना भी उसका जीवन बचाएगा।

याद रखें, जब आप किसी से मिलते हैं तो उसका गर्मजोश मुस्कराहट के साथ सम्मान करें। हमें नहीं पता पर हो सकता है कि ये आपके जीवन में भी चमत्कार दिखा दे।

सत्त्वा धर्म

एक बार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सुबह के समय मंदिर से अपने घर वापस जा रहे थे। कुछ दूरी पर ही उन्हें 'बचाओ-बचाओ, मेरी जान बचाओ' की चीख सुनाई दी। एक अछूत स्त्री को साँप ने काट लिया था। कोई उस स्त्री की सहायता नहीं कर रहा था। आचार्य द्विवेदी जैसे ही वहाँ पहुँचे, लोग कहने लगे, "आचार्य जी! इसे हाथ मत लगाना, यह अछूत है!"

द्विवेदी जी ने किसी की परवाह किए बिना कुछ और न पाकर अपना जनेऊ तोड़कर स्त्री के पैर में साँप के काटे गए स्थान से थोड़ा ऊपर कसकर बाँध दिया। फिर चाकू से उस स्थान पर चिरा लगाकर, दूषित खून बाहर निकाल दिया। स्त्री की जान बच गई। इतनी देर में गाँव के कुछ और लोग इकट्ठा हो गए। गाँव के लोग आपस में बातें करने लगे कि आज से धर्म की नाव तो समझो डूब गई। देखो तो इस महावीर को, ब्राह्मण होकर जनेऊ जैसी पवित्र वस्तु को इस स्त्री के पैर से छुआ दिया। अब कौन हम ब्राह्मणों का सम्मान करेगा?"

उनकी ऐसी बातें सुनकर द्विवेदी जी बोले, "जनेऊ के कारण ही एक स्त्री की जान बची है। मैं खुश हूँ कि आज मेरा ब्राह्मण होना किसी के काम आ सका। आज से पहले इस जनेऊ को कीमत ही क्या थी? आज इसने इसकी जान बचाकर अपनी असली उपयोगिता साबित कर दी है। अब मैं शायद ही कभी इस जनेऊ को उतारने का ख्याल करूँगा।" द्विवेदी जी की बातों का किसी के पास कोई जवाब नहीं था। सभी ने द्विवेदी जी से माफ़ी मांगी और भविष्य में मानव धर्म की रक्षा करने की कसम खाई।

प्रकृति का नियम

जीव विज्ञान के टीचर क्लास में बच्चों को पढ़ा रहे थे कि इल्ली (कोष में बंद तितली का छोटा बच्चा) कैसे एक तितली का पूर्ण रूप लेता है। उन्होंने बताया कि 2 घण्टे बाद ये इल्ली अपने कोष से बाहर आने के लिए संघर्ष करेगी, और कोई भी उसकी मदद नहीं करेगा, उसको खुद ही कोष से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने देगा।

सारे छात्र उत्सुकता से इंतज़ार करने लगे, ठीक 2 घंटे बाद तितली अपने कोष से बाहर निकलने की कोशिश करने लगी, लेकिन उसे बहुत संघर्ष करना पड़ रहा था। एक छात्र को तितली पर दया आई और उसने अध्यापक की बात को नज़रअंदाज़ करते हुए उस तितली के बच्चे की मदद की और उसे कोष से बाहर निकाल दिया। लेकिन अचानक बाहर आते ही तितली ने दम तोड़ दिया।

टीचर जब कक्षा में वापस आए और घटना के बारे में पता चला तो उन्होंने छात्रों को समझाया कि तितली के बच्चे की मौत प्रकृति के नियम तोड़ने की वजह से हुई है। प्रकृति का नियम है कि तितली का कोष से निकलने के लिए संघर्ष करना उसके पंखों और शरीर को मज़बूत और सुदृढ़ बनाता है। लेकिन छात्र की गलती की वजह से तितली मर गई।

ठीक उसी तरह ये बात हम पर भी लागू होती है। बहुत सारे अभिभावक भावनावाचक अपने बच्चों को संघर्ष करने से बचाते हैं लेकिन वे ये नहीं जानते कि ये संघर्ष ही बच्चों को मज़बूत बनाता है।

तो मित्रों, संघर्ष ईसान को मानसिक और शारीरिक रूप से मज़बूत बनाता है। जो लोग जीवन में संघर्ष नहीं करते उनके हाथ सिर्फ विफलता ही लगती है।



वाहाडाड़ीला-ओडिशा। सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान सांसद प्रत्युष राजेश्वरी सिंगा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. लबेनी। साथ ही विधायक पुर्णचन्द्र नायक तथा अन्य।



मुम्बई-मलाड। प्रसिद्ध फिल्म डायरेक्टर व प्रोड्यूसर सुभाष घई द्वारा उनके विश्व प्रसिद्ध फिल्म इंस्टीट्यूट विरिलिंग वूड्स में बनाए गए नए 'मेडिटेशन रूम' के उद्घाटन अवसर पर मोमेंटो प्राप्त करने के बाद समूह चित्र में सुभाष घई, प्रसिद्ध अभिनेत्री विद्या बालन, ब.कु. कुंती, गायक सुखविंदर सिंह तथा अन्य।



परभणी। पूर्व मंत्री सतीश चतुर्वेदी व सामाजिक कार्यकर्ता रूपाताई कुलकर्णी द्वारा 'मदर टेरेंसा' पुरस्कार प्राप्त करते हुए ब.कु. शारदा। साथ ही प्रो. सानवणे तथा अन्य।



नरकटियागंज-लौरिया(बिहार)। 21 दिवसीय महाशिवरात्रि कार्यक्रम का शुभारंभ करने के पश्चात् समूह चित्र में अध्यक्ष अपर्णा सिंह, ब.कु. अंबिता तथा अन्य।



पदमपुर। नये वर्ष पर ब्रह्माकुमारीज मार्ग का उद्घाटन करने के पश्चात् चेयरमैन बाद चरण नारंग को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. वंदना। साथ ही अन्य भाई-बहनें।



राजगढ़-म.प्र.। 'विश्व शांति दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष रघुनंदन शर्मा। साथ ही जिला जेलर अजय खरे, ब.कु. मधु व ब.कु. नीलम।



वणी-चन्द्रपुर(मह.)। विधायक संजु भाऊ बोधकुरकर के सेवाकेंद्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. कुसुम, ब.कु. कुन्दा तथा ब.कु. दीपक।



अध्यात्म के पथ पर चलना सभी को गंवारा नहीं होता है। उस्ताद अलीकारण है कि सभी इसे समाज से और समाज के लोगों से कटा हुआ महसूस करते हैं। उनका मानना होता है कि हम यदि इस पथ पर चले तो देश और दुनिया से पूरी तरह से अलग हो जायेंगे। इस मान्यता के कारण सभी उन बातों से बहुत दूर हो गये जिसके कारण उनके जीवन में बहुत सारे परिवर्तन आ सकते थे। अध्यात्म, चेतना के स्तर में वृद्धि का दूसरा नाम है, अर्थात् जब आपकी समझ का स्तर बढ़ने लग जाये, आपकी जागरूकता बढ़ने लग जाये, अपने लिए व अपने आसपास के लोगों के लिए या घटने वाली घटनाओं के लिए, तो आप समझें कि मैं कुछ हद तक

कोई भी कर सकता है राजयोग

अध्यात्मिकता की तरफ बढ़ रहा हूँ। इसी को ज्ञान बोला गया, इसी को समझ रहे हैं। यही कुरुक्षेत्र है, इसी पर हमें विजय प्राप्त करनी है, जो हम भौतिक दुनिया में रहकर भी कर सकते हैं। जैसे ही हमने विजय प्राप्त की, धर्म की स्थापना अपने आप हो जायेगी। इसका प्रयोग कैसे करें?

1. एक उदाहरण से शुरु करता हूँ। एक व्यक्ति ने तैराकी सीखी, वो भी पानी के बाहर। लेकिन उसकी परीक्षा कब शुरू होगी जब वो पानी के अंदर जायेगा। वैसे हम हैं, जैसे ही हम परिस्थितियों के बीच जायेंगे तो हमारा ज्ञान, हमारी समझ, हमारी चेतना का स्तर फितना है वो हमें पता चलने लग जायेगा।

2. सर्वप्रथम हमें मन को सुबह-सुबह कुछ अच्छे सकारात्मक विचारों से भरना है। वो क्या होंगे? सबसे पहले कहना कि मेरा पूरा दिन आज अच्छा जायेगा। साथ ही साथ आज जिससे भी

मैं मिलूंगा वो भी बहुत सकारात्मक होगा। इन विचारों को कम से कम मन में दस से पंद्रह बार दोहरायें।

3. बिस्तर का त्याग करते ही उपरोक्त संकल्प करने हैं। इससे आपका मन सकारात्मक ऊर्जा से भरेगा। मन में हम जब अपने आप को सम्मान देना शुरू करते हैं तो मन भी हमें समझना शुरू कर देता है। क्योंकि मन मेरा है, उसे मुझे वही देना है जो मुझे चाहिए।

4. जैसे मैं बहुत अच्छा हूँ/बहुत अच्छी हूँ, तो मेरा मन इन बातों को धीरे-धीरे स्वीकार करेगा। जैसे ही मैं स्वीकार करता हूँ तो लोग भी मुझे अच्छा देखने लग जायेंगे और आपको पूरी दुनिया प्यार करने लग जायेगी। और मन भी आपको बार-बार याद दिलायेगा कि आप यही हो।

5. आप अपने घर के नौकर को कहते हो कि मेरा फलाने-फलाने स्थान पर, फलाने-फलाने व्यक्तियों के साथ मीटिंग है, तुम इसे नोट कर लो और जहाँ मुझे पहले जाना है वो याद दिला देना। तो

वो आपको समय प्रति समय याद दिलाता रहता है।

6. वैसे ही अपने कर्मिंद्रियों अर्थात् (नौकर) नौकर को भी आदेश देना है कि आप समय प्रति समय हमें याद दिलाते रहो कि मैं कौन हूँ और मैं किस उद्देश्य से यहाँ पर उपस्थित हूँ। जैसे ही आप ये करने लगेंगे, आपके अपने घर के नौकर भी आपके बातों को फॉलो करने लग जाएंगे।

7. बस यहीं से शुरुआत है आपके राजयोग को। आप धीरे-धीरे देखेंगे कि आपका मन वही सोचना शुरू हो जायेगा जो आप सोचना चाहेंगे, जो कहना चाहेंगे। जब आप ऐसा करते हैं तो उस परमात्मा की शक्ति भी आपके साथ जुड़ जाती है और फिर आप हमेशा अपने आप को चार्ज महसूस करते हैं। कार्य करते हुए कैसे प्रयोग करें?

1. जब आप ऑफिस के लिए निकलते हैं, गाड़ी में बैठते हैं तो आप ये सोचें कि मेरा मन अभी बिल्कुल शांत है और एक सेकण्ड - शेष पेज 11 पर...

समाज से और समाज के लोगों से कटा हुआ महसूस करते हैं। उनका मानना होता है कि हम यदि इस पथ पर चले तो देश और दुनिया से पूरी तरह से अलग हो जायेंगे। इस मान्यता के कारण सभी उन बातों से बहुत दूर हो गये जिसके कारण उनके जीवन में बहुत सारे परिवर्तन आ सकते थे। अध्यात्म, चेतना के स्तर में वृद्धि का दूसरा नाम है, अर्थात् जब आपकी समझ का स्तर बढ़ने लग जाये, आपकी जागरूकता बढ़ने लग जाये, अपने लिए व अपने आसपास के लोगों के लिए या घटने वाली घटनाओं के लिए, तो आप समझें कि मैं कुछ हद तक

खुशियाँ आपके साथ...

Peace of Mind	192
TATA Sky	497
VIDEOCON	686
airtel	171
RELIANCE	

CABLE Network
Frequency: 4054
Symbol: 13230
Polarization: Horizontal
Satellite: INSAT-4A
+91 9414151111
+91 8104777111
www.pmtv.in

7 कदम राजयोग की ओर...

राजयोग मैकिरेशन

प्रश्न: मैं दो साल से ज्ञान में हूँ। मैं बस कंडक्टर हूँ। मुझे बाहर रहना पड़ता है। अलग-अलग शिफ्ट में ड्यूटी है। इससे मेरी दिनचर्या अपसेट रहती है। बाहर होटल में खाना भी पड़ता है, क्या करूँ?

उत्तर: बुद्धिमान मनुष्य वही है जो हर परिस्थिति में अपनी उन्नति का मार्ग खोज ले। आपको ड्यूटी शिफ्टवाइज होती है। प्रथम बात आपको अपनी ड्यूटी को इन्जॉय करना है। ये संकल्प समाप्त कर देने हैं कि ऐसा होता तो अच्छा होता... मैं कुछ कर नहीं पाता हूँ... आदि। हर कार्य में मनुष्य अच्छे से अच्छी साधना कर सकता है। अतः आपको बहुत हल्के होकर कार्य करना है क्योंकि बाबा को पता है आप बाहर रहते हैं और आपकी दिनचर्या अस्त-व्यस्त है। जब भी आप सोकर उठें चाहे दिन हो या रात आधे घण्टे योग अवश्य करें क्योंकि जब भी आप उठेंगे तभी आपके लिए अमृतवेला होगा। जब अमृतवेले उठ सकते हैं, तब अमृतवेले उठकर योग करें और जब शिफ्ट के कारण नहीं उठ सकते तो नुमाश्राम के समय योग करें। वो भी आपको अमृतवेले जैसा ही सुख देगा।

बस में कार्य करते हुए आप सबको आत्मिक दृष्टि से देखें और 8 घण्टे की ड्यूटी में 16 बार सबको सकाशा दें। सकाशा इस तरह दें- मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... शिव बाबा की किरणें मुझ पर पड़ रही हैं और मेरे मस्तक से निकलकर सभी बस के यात्रियों पर पड़ रही हैं...।

अपने खानपान के बारे में आप ज्यादा परेशान ना हों। आप शाकाहारी भोजन, लहसुन-प्याज के बिगर वाला भोजन स्वीकार करें। खाने से पूर्व भोजन को दृष्टि देकर 7 बार संकल्प करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। बस ये भोजन आपके योगाभ्यास में आपको मदद करेगा।

प्रश्न: मैं बच्चों की डॉक्टर हूँ। 10 साल से ज्ञान में हूँ। हमारे पास एक बड़ा हॉस्पिटल है। कई डॉक्टर्स साथ में काम करते हैं। मुझे रोज 70-80 पेशान्ट देखने पड़ते हैं। मैं बहुत थक भी जाती हूँ। मुझे योग आदि का समय नहीं मिलता परंतु मुझमें श्रेष्ठ योगी बनने की बहुत लगन है। मैं क्या करूँ?

उत्तर: आप हर पेशान्ट का उपचार करते वक्त 3 अभ्यास करें। जब कोई भी बच्चा आपके सामने आए, उसे आत्मिक दृष्टि से देखें और कुछ क्षणों के

लिए उसे वायब्रेशन्स दें। 7 दिन के लिए आप 7 स्वमान चुन लें जो आपको अति प्रिय हों और प्रतिदिन आपको एक स्वमान का अभ्यास प्रत्येक पेशान्ट का उपचार करते हुए करना है। तीसरी बात, जब आप दवाइयाँ लिखने लगें तो उससे पूर्व अपना कनेक्शन सुप्रीम सर्जन से जोड़ें, उसके वायब्रेशन्स प्राप्त करें तो आपको दवाइयाँ परफेक्ट होंगी। ये 3 अभ्यास आप प्रत्येक पेशान्ट के साथ करें। सहज भाव से कार्य करें और अपने कार्य को इन्जॉय करें। बस आप श्रेष्ठ योगी बन जायेंगे। साथ-साथ हमारी एक शुभ राय है कि आप प्रतिदिन 5 गरीब पेशान्ट का उपचार फ्री करें।

मन की बातें
- ब्र. कु. सूर्य

प्रश्न: मैं बी.एड. के लिए प्रवेश परीक्षा में 3 साल से असफल हो रही हूँ। इससे मेरे परिवार वाले और मैं निराशा हूँ। मैं इस वर्ष सफल होना ही चाहती हूँ। मुझे विधि बताएँ?

उत्तर: जीवन हार-जीत, सुख-दुःख, सफलता-असफलता का खेल है परंतु इसमें बहुत जल्दी निराशा होने वाला व्यक्ति सफलता से दूर रह जाता है परंतु आप 3 बार असफल हो गयी हैं। इसलिये आपके मन में निराशा का आना भी स्वाभाविक सा है। परंतु आप उम्मीद बिल्कुल ना छोड़ें। सफलता आपका इंतजार कर रही है।

आप सवेरे उठते ही एक विज्ञान बनाना कि सामने सफलता हाथ में हार लिए खड़ी है और मेरा आह्वान कर रही है और 7 बार संकल्प करना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। साथ में 1 घण्टा प्रतिदिन 21 दिन तक योगाभ्यास भी कर लो। इससे सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगी।

प्रश्न: मैं 12वीं की विद्यार्थी मानवी गुप्ता हूँ। मैं पढ़ने के लिए सवेरे नहीं उठ पाती हूँ। मेरा योग भी अच्छा नहीं लग रहा है तो मैं क्या करूँ?

उत्तर: आप इस बात की चिंता ना करें कि आप सवेरे नहीं उठ पाती हैं। जब भी आप उठें तभी अच्छा योगाभ्यास कर लें क्योंकि विद्यार्थियों को रात को

पढ़ना तो अच्छा लगता है लेकिन सवेरे उठकर नींद आती है। इसलिये आप रात को ही चाहें तो 11 बजे तक पढ़ लिया करें और सवेरे जब नींद पूरी हो जाए तब उठें और आधा घण्टा योग करके आगे की दिनचर्या प्रारंभ करें।

ध्यान देना कि टी.वी., मोबाइल और इंटरनेट का प्रयोग ज्यादा नहीं करना क्योंकि ये तीनों विद्यार्थियों की एकाग्रता पर बुरा प्रभाव डालते हैं जबकि विद्यार्थीकाल में एकाग्रता हीरे के समान है। इसलिये एक अच्छे विद्यार्थी को उन चीजों का सहर्ष त्याग कर देना चाहिए जो उनकी एकाग्रता में बाधक हैं।

प्रश्न: आप सभी लोग अमृतवेले को इतना महत्व क्यों देते हैं, जबकि भगवान तो हर समय फ्री है? दूसरी बात अमृतवेला हर देश में अलग-अलग समय पर होता है तो क्या सबको भारत के ही अमृतवेले के समय पर योग करना चाहिए या जब भी उनके देश में अमृतवेला हो तभी उन्हें ईश्वरीय अनुभूति अच्छी होगी?

उत्तर: परमात्मा तो समय से परे है लेकिन अमृतवेले का महत्व इसलिये है क्योंकि उस समय हमारा मन शांत होता है, अंतर्मन जागृत रहता है और प्रकृति में वायब्रेशन्स बहुत शीतल होते हैं और क्योंकि वो समय प्रत्येक मनुष्य को दिनचर्या का आदिकाल होता है इसलिये उस समय यदि श्रेष्ठ मनोस्थिति बना ली जाए तो पूरे दिन पर उसका गहरा और अच्छा प्रभाव होता है।

ये भगवान का वायदा है कि जिस देश में जिस समय भी ब्रह्महूर्त का समय होगा, उस समय वहाँ के राजयोगी जब उनसे अपने बुद्धि का कनेक्शन जोड़ेंगे तो श्रेष्ठ अनुभूति होगी और ईश्वरीय वरदान प्राप्त होंगे।

इसलिये हर देश में जिस समय भी अमृतवेला हो, उसी समय उन्हें सुदृढ़ योगाभ्यास करके सहज ईश्वरीय अनुभूति करनी चाहिए। इसमें भारत के अमृतवेले को अपनाने की कोई आवश्यकता नहीं। भारत वालों के लिए भारत का अमृतवेला और अन्य देशों के लिए अपना-अपना अमृतवेला समान महत्व का है। सभी को चाहिए कि अमृतवेला के समय बुद्धि की लाईन क्लियर करके बैठें और स्वयं में ईश्वरीय शक्तियाँ भरें। Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

जीवन के कुछ आदर्श बनाएं

भगवान की रचना में मनुष्य एक आदर्श प्राणी है। मनुष्य के पास चिंतन-शक्ति है, विवेक-शक्ति है। मनुष्य का जीवन ही अन्य सभी प्राणियों के लिए भी अनुकरणीय होता है। यहां हम एक सूक्ष्म मनोविज्ञान की चर्चा कर रहे हैं। मनुष्य जो कुछ सोच रहा है, वह जैसा सोच रहा है उसके प्रकमन चारों ओर फैलते हैं। मन क्योंकि अत्यंत शक्तिशाली है इसलिए उन प्रकमनों का प्रभाव स्थूल प्रकृति पर, अन्य मनुष्यों पर व अन्य प्राणियों पर अर्थात् जीव-जंतुओं पर भी प्रकृत है। यदि मानव समाज में हिंसा की प्रवृत्ति बढ़ जाए तो जानवर भी अधिक हिंसात्मक हो जाते हैं। और यदि किसी के परिवार में पूर्ण शान्ति है तो उसमें पालतू कुत्ते, बिल्ली भी शान्त स्वभाव के बने रहते हैं। अर्थात् मनुष्य ही इस सम्पूर्ण सृष्टि का आधार है। मनुष्य सुखी तो सम्पूर्ण जगत सुखी, मनुष्य दुःखी तो समस्त प्राणी दुःखी और यदि मनुष्य शान्त तो चहुं ओर शान्ति का साम्राज्य आ जाता है। यहां तक कि प्रकृति भी सुखदाई बन जाती है। तो इतना महान् है मनुष्य और इतना महत्व है उसके विचारों का। इस सत्य को ध्यान में रखते हुए हमें अपने जीवन के कुछ सिद्धान्त बना लेने चाहिए। सिद्धान्तों पर आधारित जीवन सदा ही शक्तिशाली होता है। वह जीवन जो सिद्धान्तविहीन है, मूल्यहीन माना जायेगा। सिद्धान्त बनाकर मनुष्य को स्वयं को उन सिद्धान्तों के प्रति समर्पित कर देना चाहिए अर्थात् उन पर चलने के लिए मन में दृढ़ संकल्प धारण कर लेना चाहिए, किसी भी कीमत पर, चाहे कुछ भी कुर्बानी क्यों न देनी पड़े, उन पर कायम रहना चाहिए। विश्व प्रसिद्ध उदाहरण है हरिश्चन्द्र का, जिसने सत्य वचन निभाने के लिए घोर कष्ट सहे। ऐसे एक नहीं हजारों उदाहरण हैं कि मनुष्य ने अपने सिद्धान्तों का पालन करने के लिए स्मरणीय कुर्बानियां दीं।

तो हम पाठकों के लाभार्थ यहां कुछ सिद्धान्तों का वर्णन कर रहे हैं। इन्हें अपना जीवनसाथी बना लेना चाहिए। इससे जीवन में बड़ा ही आत्म संतोष प्राप्त होगा और उन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर आप प्रसिद्ध होंगे। हाँ, उन पर खरा उतरने के लिए आपको कुछ परीक्षाओं से गुजरना पड़ सकता है, उसके लिए आपको तैयार रहना होगा— यह याद रखते हुए कि सोना तपकर ही निखरता है, जीवन भी तपकर ही निखरता है। बिना

तपा जीवन तो अंदर से मैला होता है।
सिद्धान्त इस प्रकार हो सकते हैं:-
1. मैं हर हालत में सभी को सुख दूंगा, किसी का दिल नहीं दुखाऊंगा।
2. मैं सदा ही झुककर रहूंगा, अहंकार को जीवन रूपी मंदिर में प्रवेश न होने दूंगा।
3. मेरा लक्ष्य होगा—असहायों को मदद करना।
4. मैं पर-निंदा, पर-चिंतन व व्यर्थ बातों में अपना कीमती समय नहीं गवाऊंगा।
5. मैं किसी भी परिस्थिति में हिम्मत व साहस नहीं छोडूंगा।
6. मैं कर्मठ बनकर रहूंगा, न कि अलबेला।
7. मैं कभी मुख से कड़वे वचन नहीं बोलूंगा।
8. मैं सदा संतोष रूपी धन से स्वयं को भरपूर रखूंगा।
9. मैं असत्य नहीं बोलूंगा व किसी से अन्याय नहीं करूंगा।

इसी प्रकार कुछ और भी सिद्धान्त हो सकते हैं। ऐसे कुछ सिद्धान्त अपनाकर समाज के समक्ष, अपने परिवार के समक्ष हमें आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। क्योंकि हमारे वर्तमान समाज में इस आदर्श का बहुत अभाव हो गया है। सभी कलियुग की धारा में तीव्र वेग से बहे चले जा रहे हैं, उससे अलग मार्ग चुनने का किसी में भी साहस नहीं रह गया है। इसलिए हमारी नव पीढ़ी कोई भी आदर्श न पाकर निराशा के कारण अनीतिकता को ही जीवन का मार्ग समझ चुकी है। हम नव पीढ़ी को दोष नहीं दे सकते। उनके सामने आदर्श है ही कहाँ। यदि कोई आदर्श है भी तो वे भ्रष्टाचार और अनाचार के काले बादलों में इतने छुप गये हैं कि खोजने वालों को इस अंधकार में कोई भी सत्य नज़र नहीं आता। तो हमें ये पर्दे हटाने होंगे। अब देखें— कौन आगे आता है, समाज के समुच्च प्रत्यक्ष आदर्श दिखाने में।

जैसा हमने कहा— सिद्धान्तों पर अडिग रहने के लिए मनुष्य को अवश्य ही सहन करना पड़ेगा, उसे जीवन में कुछ घाटा भी नज़र आयेगा, उसे लोगों की खरी-खोटी भी सुननी पड़ सकती है, परंतु यदि वह सिद्धान्तों पर अटल रहे तो जीत उसकी ही होगी।

कोई भी कर सकता है... -पेज 10 का शेष...
पर एक बार ऐसे ही नज़र दौड़ाना है और ये कहना कि पूरी कैबिन शान्ति के वातावरण से भर जाये और जो भी मेरे सामने आ जाये वो अपनी बात पूरी तरह से कहे और मैं उसका उचित उत्तर दूँ, बिना किसी गुस्सा या नाराज़गी के।
4. अब जैसे ही आप व्यस्त होना शुरू होते हैं तो अपने मोबाइल को एक टूल की तरह इस्तेमाल करें। उसमें एक-एक घण्टे का रिमाइंडर लगा दें जो आपको याद दिलाता रहे कि हरेक घण्टे यही संकल्प करना है।

5. शाम को सभी कर्मचारियों के साथ आपको हाथ मिलाते हुए ये सोचना है कि सभी के अंदर मेरे हाथों से एक सकारात्मक ऊर्जा निकलकर प्रवेश कर गई और सभी की थकावट दूर हो गई।
6. इससे आपको अपने मन में फालतू बातों के लिए जगह नहीं मिलेगी और आपका पूरा दिन अच्छा गुज़रेगा।
7. अच्छा-अच्छा कहने से अच्छा हो ही जायेगा और आप भी हमारी तरह राजयोग की पहली सीढ़ी पार कर लेंगे।
-ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

समस्त विश्व उसका गुणगान करेगा, उसकी महानताओं को स्वीकार करेगा और उसके पद-चिन्हों पर चलने में गौरव का अनुभव करेगा। तो इस भय को तिलांजलि दे दें कि पता नहीं हम सिद्धान्तों पर चल सकेंगे या नहीं, इसलिए हम



सिद्धान्त बनाये ही नहीं। इससे तो हम जैसे हैं वैसे ही ठीक। कहीं संसार हम पर हसे नहीं। इन कमज़ोर विचारों से जीवन की शक्ति नष्ट न करें। यह याद रखें कि मनुष्य जो चाहे कर सकता है।

आप घर में सभी मिलकर भी कुछ सिद्धान्त बना सकते हैं। एक बार एक सज्जन ने यह नियम बनाया था कि हम घर में मांस नहीं पकाएंगे, किसी भी पार्टी में मदिरा नहीं भेंट करेंगे, न स्वयं पियेंगे। यद्यपि उनको बड़ी-बड़ी पार्टियों में जाना पड़ता था, उनके घर में भी मेहमान आकर मांसाहारी चटपटे भोजन का निवेदन करते थे। परंतु वे अटल थे अपने नियम पर, चाहे उन्हें कहीं भी जाना हो, वे शाकाहारी भोजन ही लेते थे। उनके घर भी शाकाहारी भोजन खाकर लोग इतने प्रसन्न होते थे, वे उनकी दृढ़ता से इतने प्रभावित होते थे कि स्वयं भी मांसाहारी भोजन का त्याग कर देते थे। फलस्वरूप वे बड़े प्रसिद्ध हुए। आज भी उनका कुल इन सिद्धान्तों का पालन कर रहा है।

इस प्रकार सिद्धान्त भी समाज की आधारशिला है। यदि किसी समाज की ये आधारशिला मज़बूत नहीं तो वह समाज खोखला व कमज़ोर हो जाता है, उसका महत्व भी नहीं रहता और वह सम्मानित भी नहीं होता। इसलिए समझदार लोगों को चाहिए कि सिद्धान्तमय जीवन बनाने की प्रणाली का शुभारंभ करें। यही उनकी सच्ची समाजसेवा होगी।



जयपुर। 'गीता ज्ञान रहस्य प्रवचन माला' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए पूर्व विधायक बगर गंगा देवी, राजनेता राजेश मिश्रा, महंत श्री श्री 108 केशवानंद, कुम्भ केकर बाला ट्रस्ट, ब.कु. सुषमा, ब.कु. वीणा तथा पार्षद संजय जागड़।



लॉस एन्जेलिस। इंटरनेशनल बुद्धिस्ट प्रोग्रेस सोसायटी द्वारा आयोजित 'विश्व शांति समारोह' में सम्मिलित हुए ब.कु. गीता।



मोहाली। शिवरात्रि कार्यक्रम के दौरान शिव ध्वज फहराने के बाद ईश्वरीय स्मृति में विधायक बलबीर सिंह सिद्धु, ब.कु. प्रेमलता, ब.कु. रमा तथा अन्य।



चोपड़ा-महा। 'राजयोग द्वारा तनाव मुक्त जीवन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पूर्व नगराध्यक्ष सुशीला शहा, पूर्व नगराध्यक्ष रमन भाई, गुजराती पत्रकार के.डी. चौधरी, व्यापारी विश्वनाथ अग्रवाल, ब.कु. उषा, माउण्ट आबू, ब.कु. मिनाक्षी तथा ब.कु. मंगला।



फरीदाबाद। ब्रह्माकुमारों के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग एवं फरीदाबाद इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के समायोजन से 'स्वच्छ मन से स्वच्छ उद्योग' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं शिव नारायण सिंह, कमिश्नर, सेन्ट्रल एक्सपोज़िशन अपील्स, एस.के. तेनेजा, एक्जीक्यूटिव कमेटी मेम्बर, फरीदाबाद इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, ब.कु. उषा तथा ब.कु. भारत भूषण।



गुवाहाटी-रूप नगर(असम)। 'परिवार समृद्धि' विषयक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में इफको के ऑफिसर्स, मैनेजर्स, ब.कु. संहिता, ब.कु. मौसमी तथा अन्य।

चरित्र ही जीवन में शांति व साधना का पूरक है : राज्यपाल वजुभाई वाला

बैंगलूर। महात्मा गांधीजी ने अपनी सत्यता की शक्ति से ही अंग्रेजों से इस देश को स्वतंत्रता दिलायी। हमारे देश को आध्यात्मिक शक्ति सारी दुनिया को सुख शांति से भर रही है। ब्रह्माकुमारी संस्था के 146 से भी ज्यादा सेवाकेंद्र हैं जो जन-जीवन में शांति प्रदान करने के लिए राजयोग द्वारा सेवाएं दे रहे हैं।

बैंगलूर के जक्कुर में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी के नवनिर्मित 'शिवशक्ति भवन' और 'ज्ञानामृत भवन' का उद्घाटन और 'दिव्य प्रकाश भवन' शिलान्यास कार्यक्रम में उपस्थित कर्नाटक राज्य के राज्यपाल माननीय वजुभाई रुदाभाई वाला ने कहा कि दाता के हाथ कभी खाली नहीं होते और मांगने वालों के हाथ कभी भरते नहीं। इस सत्य को जान हमें भी महादानो बनना है। जैसे भौतिक शरीर का शुद्धिकरण करते हैं, ऐसे ही आंतरिक अर्थात् आत्मा के शुद्धिकरण की तरफ बहुत ध्यान देते हुए शांति का जीवन बनाना है।

ब्रह्माकुमारी की संयुक्त मुख



बैंगलूर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए राज्यपाल महामहिम वजुभाई रुदाभाई वाला, दादी रतनमोहिनी, श्री श्री शिवरूद्र महास्वामी जी, ब.कु. वीणा, ब.कु. मृत्युंजय तथा ब.कु. पदमा व ब.कु. लक्ष्मी।

प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने अपने आशीर्वाचन देने के साथ-साथ जीवन में आध्यात्मिक शांति का महत्व और राजयोग द्वारा होने वाले फायदे को विस्तृत रूप से बताया। इस अवसर पर उपस्थित सभी भाई बहनों को राजयोग ध्यान के अभ्यास द्वारा अनुभव

कराया।

इसके साथ बैंगलूर बेली मठ महासंस्थान के श्री श्री शिवरूद्र महास्वामीजी ने कहा कि विश्व मानव संदेश कहता है 'यह अलग है वह अलग है यह नहीं सोचिए, सब हमारे हैं हम सबके हैं' इसी दिशा में

ब्रह्माकुमारी संस्था दुनिया भर में समर्पण मनोभाव से शांति स्थापना का ध्येय लेकर कार्यनिर्वाह कर हर है। हम राजयोगी भाई बहनों को उनके इस कार्य के लिए दिल से मुबारक देते हैं।

कार्यक्रम के आरंभ में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब.कु. वीणा ने

प्रस्ताविक भाषण किया तथा साथ साथ ब्रह्माकुमारी के राजयोग प्रशिक्षण और सेवाओं की विस्तृत जानकारी दी और यथार्थ रूप से राजयोग का अभ्यास कर परमात्मा का अनुभव करने का संदेश दिया।

राज्यपाल वजुभाई रुदाभाई वाला ने कर्नाटक की जमीन पर सच्चे अर्थ में शुद्ध और चरित्रवान मनुष्यों की रचना में कार्यरत ब्रह्माकुमारी को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि जब सरकार चरित्रवान लोगों के निर्माण के कार्य को सुचारु रूप से करने में विफल हो रही है, वहीं ब्रह्माकुमारी संस्था विश्व भर में चरित्रवान व्यक्तियों के निर्माण कार्य में तत्पर है। बैंगलूर सिटी सब ज़ोन संचालिका ब.कु. पदमा ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया।

कार्यक्रम के अंत में दादी ने वहां मौजूद सभी गणमान्य अतिथियों को ईश्वरीय सौगत दी और सम्मानित किया।

गुलबर्गा सबजोन संचालिका ब.कु. विजया और अहमद अनवर जी ने कार्यक्रम का मंच संचालन किया।

दूषित अन्न व मन से हो रहा नुकसान: राम नाईक

ब्रह्माकुमारी ने किसान सशक्तिकरण अभियान का किया शुभारंभ।

लखनऊ। अंतर्राष्ट्रीय संस्था प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय तथा उसकी सहयोगी संस्था राजयोग एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउंडेशन द्वारा कृषि भवन से 'किसान सशक्तिकरण अभियान' का शुभारंभ किया गया। इस मौके पर आयोजित समारोह में राज्यपाल माननीय राम नाईक ने कहा कि आज दूषित अन्न के कारण अस्पताल मरीजों से पटे पड़े हैं। वहीं, दूषित मन के कारण समाज में अशान्ति है। समाजसेवी संस्था ब्रह्माकुमारी द्वारा किसानों को अन्न शुद्धि के लिए प्राचीन जैविक और यौगिक खेती की विधि बताने तथा मन की शुद्धि के लिए राजयोग का व्यवहारिक प्रशिक्षण देने से प्रदेश के किसानों में नई जागृति आएगी।

उन्होंने कहा कि ऐसी कोई संस्था नहीं जो इतने बड़े स्तर पर खेती का ऐसा काम करती हो। राजयोग एज्युकेशन



लखनऊ। झण्डी दिखाकर 'दिव्य किसान सेवा रथ' को रवाना करते हुए राज्यपाल राम नाईक। साथ हैं ब.कु. राधा व अन्य।

एण्ड रिसर्च फाउंडेशन का ग्राम्य विकास प्रभाग आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक उन्नति के लिए सतत् प्रयत्नशील है। ये महत्वपूर्ण आंदोलन व अभियान है। इससे समाज के विभिन्न वर्गों को लाभ मिलेगा। इसी तरह

के प्रयासों से उत्तर प्रदेश से 'उत्तम प्रदेश' बन सकता है। ग्राम्य विकास प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब.कु. राजू ने बताया कि अभियान के अंतर्गत

तीन 'दिव्य किसान सेवा रथ' प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्र में एक माह तक भ्रमण करेगा। इन रथों के साथ दो-दो

तीन 'दिव्य किसान सेवा रथ' लखनऊ से वाराणसी, उरई व बरेली के लिए हुए रवाना, प्रदेश के किसानों को सेवाधारी शाश्वत यौगिक खेती का दैंगे व्यवहारिक ज्ञान एवं प्रशिक्षण

गाड़ियां भी होंगी, जिनमें संस्था के 10-12 कार्यकर्ता होंगे। किसानों को सेवाधारी शाश्वत यौगिक खेती का व्यवहारिक ज्ञान एवं प्रशिक्षण देंगे। साथ

ही, किसानों को सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं की जानकारी देंगे। लखनऊ से एक रथ वाराणसी, दूसरा उरई और तीसरा बरेली तक जाएगा।

उन्होंने कहा कि सृष्टि के आदिकाल सतयुग में जब प्रकृति सम्पूर्ण सतीप्रधान थी, तब खेती से पौष्टिक शुद्ध अन्न, फल व सब्जियां पैदा होती थीं। शुद्ध अन्न के कारण लोगों का मन शुद्ध और शरीर निरोगी

होता था। प्रकृति के पाँचों तत्व सुखदायी थे। धन-धान्य से सम्पन्न होने के कारण भारत 'सोने की चिड़िया' कहलाता था। धीरे-धीरे इंसान देहभान के कारण पांच विकारों के वशीभूत होता गया। जनसंख्या बढ़ने से अधिक अन्न उपजाने का दबाव बढ़ता गया। फलस्वरूप, रसायनिक खादों तथा कीटनाशक जहर का अनियंत्रित उपयोग होने लगा। इससे मिट्टी का स्वास्थ्य बिगड़ा और पर्यावरण की भारी क्षति पहुँची। उपजाऊ धरती ऊसर व बंजर होने लगी। यह एक गम्भीर समस्या है, जिसके समाधान की नितांत आवश्यकता है। समारोह को प्रमुख सचिव रजनीश दूबे, ब.कु. राधा, ब.कु. बन्नी विशाल, ब.कु. मनोरमा, कृषि निदेशक आदेश कुमार विशनोई व राज्य कृषि प्रबन्धन संस्थान के निदेशक विनय प्रकाश श्रीवास्तव आदि ने भी सम्बोधित किया। वहीं, महाराष्ट्र के किसान भाई बाला साहब ने कार्यक्रम में आए किसानों से शाश्वत यौगिक खेती के अपने अनुभव साझा किए।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारी, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आवू रोड (राज.)- 307510

सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkiv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेबल एट शान्तिवन, आवू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 14th Feb 2015
संपादक: ब.कु. गंगाधर, प्रकाशक: ब.कु. करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारी मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.वी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।